सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, श्रावण-भाद्रपद, विक्रम सम्वत् 2082, अगस्त, 2025

आपदाग्रस्त परिवार के लिए सहयोग

गत दिनों हिमाचल प्रदेश में भयानक बाढ़ आई। इसमें बहुत नुकसान हुआ। अनेक लोगों की मौत हो गई। लोगों के घर-द्वार बह गए। इन सबको देखते हुए अनेक संगठनों ने पीड़ितों की मदद के लिए राहत सामग्री भेजी। एक ऐसा ही संगठन है- अपना घर आश्रम, पंजाब खोर, दिल्ली -110081। इस संगठन ने डॉ. संजय जिन्दल जी (आपदा प्रबंधन प्रमुख सेवा भारती दिल्ली) के माध्यम से प्राप्त राहत सामग्री दी, जिसे राष्ट्रीय सेवा भारती के द्वारा हिमाचल भेजी गई। इस संकट की घड़ी में सहयोग के लिए अपना घर आश्रम के कार्यकर्ताओं को बहुत-बहुत धन्यवाद। ❒

गोपालधाम का अवलोकन

सेवा भारती द्वारा संचालित प्रकल्पों को आए दिन कुछ विशिष्ट लोग देखने आते हैं। इसी कड़ी में गत दिनों गोपालधाम प्रकल्प, श्रीराम मन्दिर, रघुवीर नगर में श्री योगेश सेठी जी (दानदाता) पधारे। उनके साथ वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री संजय जिन्दल भी थे। वहां के बच्चों से मिलकर श्री योगेश सेठी अत्यंत प्रसन्न हुए। ❒

राम मंदिर में अभ्यास वर्ग

गत दिनों सेवा भारती, तिलक जिले की शिक्षिकाओं का राम मंदिर में अभ्यास वर्ग हुआ। इसमें केशवपुरम के विभाग प्रचारक श्री मनीष जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने शिक्षिकाओं से कहा कि बच्चों को कंप्यूटर, सिलाई तथा अन्य कोर्स को सिखाते सिखाते बच्चों के मन में देशभक्ति, संस्कार, परिवार में हमें कैसे रहना है, पर्यावरण, पानी का सदुपयोग जैसे विषय भी लेने चाहिए, ताकि बच्चे देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकें। बाद में जिन बच्चों ने दिल्ली पुलिस के माध्यम से सेल्फ डिफेंस का 10 दिन का प्रशिक्षण लिया था उनको सर्टिफिकेट दिया गया। ❒

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य शिविर

मुखर्जी नगर जिले में स्वास्थ्य शिविर आदर्श नगर की सेवा बस्ती महाराणा प्रताप बस्ती केंद्र में साईं द्वारका माही द्वारा लगाया गया। इसमें महिलाओं के उपचार हेतु औषधि दी गई। अन्य सभी को सूट व साड़ी भी दी गई, जलपान भी हुआ, जिसमें 160 महिलाएं रहीं। इस अवसर पर सुरेश जी, महेश जी, सुरेंद्र जी, जय प्रकाश गुप्ता जी आदि उपस्थित रहे। ❒

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, अगस्त, 2025

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
आयु और आरोग्य के लिए रक्षासूत्र	कृष्ण कुमार यादव	4
रक्षाबंधन से जुड़ी रोचक कहानियां	रिशिता	6
कहानी : इस वक्त		7
समाजोद्धारक श्रीकृष्ण	अरुण देव	8
साक्षात्कार : 'हरित भारत का सपना हो रहा साकार'		11
प्रदूषण से जंग को तैयार कर रहे पौध की फौज		13
स्वतंत्रता दिवस पर युवकों से अपील	गंगा प्रसाद सुमन	14
कविता : राखी	सुमनजीत	15
गुरु पूर्णिमा और गुरु दक्षिणा की प्रेरणा	मानवेन्द्र	16
दिल्ली में आयोजित हुआ आपदा प्रबंधन वर्ग	डॉ. संजय जिंदल	19
संस्कृति के संरक्षक	शारदा भसीन	22
किचन गार्डन : एक स्वस्थ और सुंदर विकल्प	अमिता गुप्ता	23
कैसे शुरू हुई कांवड़ यात्रा	विनोद श्रीवास्तव	24
बच्चों में नैतिक सोच को कैसे बढ़ाया जाए		25
कुछ घरेलू नुस्खे		26
मालती मुर्मू की प्रेरक शिक्षा	रंजना शर्मा	27
सेवा भारती के कारण मैं आज इस ऊँचाई पर हूँ	सौरभ	28
सेवाधाम विद्यामंदिर की गतिविधियाँ		29
सावन मन भावन	डॉ. दीप्ति अग्रवाल	30
हरियाली तीज के कार्यक्रम		32

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

आयु और आरोग्य के लिए रक्षासूत्र

■ कृष्ण कुमार यादव

रक्षाबंधन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपनी रक्षा के लिए भाई को राखी बांधती है। भारतीय परंपरा में विश्वास का बंधन ही मूल है और रक्षाबंधन इसी विश्वास का बंधन है। यह पर्व मात्र रक्षासूत्र के रूप में राखी बांध कर रक्षा का वचन ही नहीं देता बल्कि प्रेम, समर्पण, निष्ठा व संकल्प के जरिए हृदयों को बांधने का भी वचन देता है। पहले रक्षाबंधन बहन-भाई तक ही सीमित नहीं था अपितु आपत्ति आने पर अपनी रक्षा के लिए अथवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिए किसी को भी रक्षासूत्र (राखी) बांध या भेजा जाता था। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि - मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव - अर्थात् सूत्र अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षा-सूत्र भी लोगों को जोड़ता है। गीता में ही कहा गया है कि जब संसार में नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है तब ज्योतिर्लिंगम भगवान शिव प्रजापति ब्रह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं जिन्हें बहनें मंगलकामना करते हुए भाइयों को बांधती हैं और भगवान शिव उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दु:ख और पीड़ा से मुक्ति दिलाते हैं।

राखी का सर्वप्रथम उल्लेख पुराणों में प्राप्त होता है। असुरों के हाथ देवताओं की पराजय के पश्चात् अपनी रक्षा के निमित्त सभी देवता इन्द्र के नेतृत्व में गुरु बृहस्पति के पास पहुंचे। इन्द्र ने उनसे दु:खी होकर कहा- 'देवगुरु! अच्छा होगा कि अब मैं अपना जीवन समाप्त कर लूं' तब गुरु बृहस्पति के निर्देश पर इन्द्राणी ने श्रावण-पूर्णिमा के दिन इन्द्र सहित सभी देवताओं की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा, अंतत: इन्द्र ने युद्ध में विजय पायी। एक अन्य कथानुसार राजा बलि को दिये गये वचनानुसार भगवान विष्णु वैकुंठ छोड़कर बलि के राज्य की रक्षा के लिए चल दिये। तब देवी लक्ष्मी ने ब्राह्मण ाी का रूप धारण कर श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि की कलाई पर पवित्र धागा बांधा और उसके लिए मंगल कामना की। इससे प्रभावित हो राजा बलि ने देवी को अपनी बहन मानते हुए उसकी रक्षा की प्रतिज्ञा की। तत्पश्चात् देवी लक्ष्मी अपने असली रूप में प्रकट हो गयीं। उनके कहने से बलि ने भगवान इन्द्र से वैकुंठ वापस लौटने की विनती की। त्रेतायुग में रावण की बहन शूर्पनखा लक्ष्मण द्वारा नाक काटने के पश्चात् रावण के पास पहुंची और रक्त से सनी साड़ी का एक छोर फाड़कर रावण की कलाई में बांध दिया और कहा- 'भैया! जब-जब तुम अपनी कलाई को देखोगे तुम्हें अपनी बहन का अपमान याद आयेगा और मेरी नाक काटने वाले से तुम बदला ले सकोगे।'

इसी प्रकार महाभारत काल में भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में एक बार चोट लगने से खून की धारा बहने लगी तब द्रौपदी ने तत्काल अपनी साड़ी का किनारा फाड़कर भगवान कृष्ण के घाव पर बांध दिया। कालांतर में श्रीकृष्ण ने दु:शासन द्वारा द्रौपदी के वस्त्रहरण के प्रयास को विफल

कर इस रक्षासूत्र की लाज रखी। द्वापर युग में ही एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा कि मैं महाभारत के युद्ध में कैसे बचूंगा तो उन्होंने तपाक से जवाब दिया- 'राखी का धागा ही तुम्हारी रक्षा करेगा।'

ऐतिहासिक युग में भी सिकंदर व पोरस ने युद्ध से पूर्व रक्षासूत्र की अदला-बदली की थी। युद्ध के दौरान पोरस ने जब सिकंदर पर घातक प्रहार हेतु अपना हाथ उठाया तो रक्षासूत्र देखकर उसके हाथ रुक गये और वह बंदी बना लिया गया। सिकंदर ने भी पोरस के रक्षासूत्र की लाज रखते हुए और एक योद्धा की तरह व्यवहार करते हुए उसका राज्य वापस कर दिया। मुगलकाल के दौर में जब हुमायूं चित्तौड़ पर आक्रमण करने बढ़ा तो राणा सांगा की विधवा कर्मवती ने हुमायूं को राखी भेजकर अपनी रक्षा का वचन लिया। हुमायूं ने इसे स्वीकार कर चित्तौड़ पर आक्रमण का ख्याल दिल से निकाल दिया और कालांतर में राखी की लाज निभाने के लिए चित्तौड़ की रक्षा हेतु गुजरात के बादशाह ने भी युद्ध किया। इसी प्रकार न जाने कितनी मान्यताएं रक्षाबंधन से जुड़ी हुई हैं।

लोकपरंपरा में रक्षाबंधन के दिन परिवार के पुरोहित द्वारा राजाओं और अपने यजमानों के घर जाकर सभी सदस्यों की कलाई पर मौली बांधकर तिलक लगाने की परंपरा रही है। पुरोहित द्वारा दरवाजों, खिड़कियों, पुस्तकों तथा नये-नये बर्तनों पर भी पवित्र धागा बांधा जाता है और तिलक लगाया जाता है। यही नहीं बहन भांजों द्वारा और गुरुओं द्वारा शिष्यों को रक्षासूत्र बांधने की भी परम्परा रही है। राखी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई। कई बहनों ने अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर देश की लाज रखने का वचन लिया।

1905 में बंग-भंग आंदोलन की शुरुआत लोगों द्वारा एक-दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर हुई। राखी से जुड़ी एक मार्मिक घटना क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन की है। आजाद एक बार तूफानी रात में शरण लेने हेतु एक विधवा के घर पहुंचे। पहले तो उसने आजाद को डाकू समझकर शरण देने से मना कर दिया, पर यह पता चलने पर कि वह क्रांतिकारी आजाद है तो ससम्मान उन्हें घर के अंदर ले गयी। बातचीत के दौरान आजाद को पता चला कि उस विधवा को गरीबी के कारण जवान बेटी की शादी हेतु काफी परेशानियां उठानी पड़ रही हैं तो उन्होंने द्रवित होकर उससे कहा- 'मेरी गिरफ्तारी पर 5 हजार रुपये का इनाम है, तुम इसे अंग्रेजों को पकड़वा दो और उस इनाम से बेटी की शादी कर लो।' यह सुनकर विधवा रो पड़ी, बोली- 'भैया! तुम देश की आजादी हेतु अपनी जान हथेली पर रखकर चल रहे हो और न जाने कितनी बहू-बेटियों की इज्जत तुम्हारे भरोसे है। अतः मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकती।' यह कहते हुए उसने एक रक्षासूत्र आजाद के हाथों में बांध कर देश-सेवा का वचन लिया। सुबह जब विधवा की आंखें खुलीं तो उसने देखा कि आजाद जा चुके हैं और तकिये के नीचे 5 हजार रुपये पड़े हैं। उसके साथ एक पर्ची पर लिखा था- 'अपनी प्यारी बहन हेतु एक छोटी सी भेंट- आजाद।'

देश के विभिन्न अंचलों में राखी पर्व को भाई-बहन के त्योहार के अलावा भी भिन्न-भिन्न तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन विशेष रूप से समुद्र देवता पर नारियल चढ़ा कर उपासना की जाती है और नारियल की तीन आंखों को शिव के तीन नेत्रों की उपमा दी जाती है। बुंदेलखंड में राखी को कजरी-पूर्णिमा या कजरी-नवमी भी कहा जाता है। इस दिन कटोरे में जौ व धान बोया जाता है तथा सात दिनों तक वह पानी देते हुए मां भगवती की वंदना की जाती है।

उत्तरांचल के चंपावत जिले के देवीधूरा में राखी पर्व पर बाराही देवी को प्रसन्न करने के लिए पाषाणकाल से ही पत्थर-युद्ध का आयोजन किया जाता रहा है जिसे स्थानीय भाषा में 'बग्वाल' कहते हैं। सबसे आश्चर्यजनक तो यह है कि इस युद्ध में आज तक कोई भी गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ है और न ही किसी की मृत्यु हुई है। इस युद्ध में घायल होने वाले योद्धा सर्वाधिक भाग्यवान माना जाता है एवं युद्ध की समाप्ति के बाद पुरोहित पीले वस्त्र धारण कर रणक्षेत्र में आकर योद्धाओं पर पुष्प व अक्षत की वर्षा कर आशीर्वाद देते हैं। इसके बाद युद्ध बंद हो जाता है और योद्धाओं का मिलन समारोह होता है।

रक्षाबंधन हमारे सामाजिक परिवेश एवं मानवीय रिश्तों का अंग है। लेकिन आज इसमें पवित्रता की जगह कुछ-कुछ आडंबर का भी समावेश हो गया है। आज जरूरत है आडंबर की बजाय इस त्योहार के पीछे छिपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों की अहमियत देने की तभी व्यक्ति, परिवार समाज और राष्ट्र-सभी का कल्याण संभव होगा। ❐

(साभार: वेद अमृत)

रक्षाबंधन से जुड़ी रोचक कहानियां

■ रिशिता

वैसे तो हम सभी रक्षाबंधन के महत्व को जानते हैं और क्या कुछ करते हैं यह भी सभी को मालूम है। फिर भी इससे जुड़ी कुछ कहानियों को याद करना चाहिए।

श्री कृष्ण जी और द्रौपदी

द्रौपदी पांच पांडव की पत्नी थी। श्री कृष्ण उनके मित्र और गुरु के समान थे। एक बार युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। वहां उपस्थित शिशुपाल ने श्री कृष्ण ,भीष्म सहित कई लोगों का अपमान किया। जब उसके इस कृत्य की सीमा पार हो गई तो श्री कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से उसे मार डाला। ऐसा करने से उनकी उंगली में चोट लग गई और खून निकलने लगा। यह देख द्रौपदी ने अपनी साड़ी के टुकडे को फाड़ कर उनकी उंगली पर बांध दिया ,यह देखकर श्री कृष्ण जी अभीभूत हो गए और द्रौपदी को वर दिया कि, यह उसका उन के ऊपर ;ण है और वह जब भी उन्हें पुकारेगी, वे उसकी रक्षा के लिए आएंगे। इसके कुछ समय बाद पांडवों ने चौपड़ में कौरवों को अपना सब कुछ हार दिया। दुशासन द्रौपदी को जबरदस्ती दरबार में ला उसका वस्त्र हरण किया। लज्जा से रोती द्रौपदी ने श्री कृष्ण को याद किया और उनसे सहायता मांगी। चमत्कार ऐसा हुआ कि द्रौपदी की साड़ी खत्म ही नहीं हुई और दुशासन उसे खींचता रह गया। इस तरह श्री कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी। द्रौपदी की साड़ी का वह टुकड़ा राखी का ही स्वरूप था।

राजा बली और देवी लक्ष्मी

एक बार भगवान विष्णु लंबे समय तक अपनी पत्नी लक्ष्मी से दूर होकर ,और अपने भक्त प्रहलाद के पोते और असुर के राजा बली के द्वारपाल के रूप में खुद को छिपाने के लिए मजबूर हो गए थे। इस पर देवी लक्ष्मी चिंतित हो गईं और अपने पति का पता लगाने वे पृथ्वी पर गईं। वे राजा बली के पास गईं और बोलीं मेरे पति कहीं दूर चले गए हैं, क्या मैं आपकी शरण में आ सकती हूं? राजा बली ने उनका बहुत ख्याल रखा। पूर्णिमा के दिन लक्ष्मी जी ने बली के हाथ पर राखी बांधी और साथ ही उनकी रक्षा के लिए प्रार्थना की। यह देखकर बली अभिभूत हो गए और बोले कि आपको मुझसे जो मांगना हो सो मांग लो। इस पर देवी लक्ष्मी ने कहा कृपा करके आप अपने द्वारपाल को मुक्त कर दें, वे मेरे पति हैं। तब वह चौक गया और लक्ष्मी व विष्णु अपने असली रूप में प्रकट हुए। अपने वचन अनुसार उसने भगवान विष्णु को लौट जाने का अनुरोध किया। इसलिए कई जगह

पर अपनी बहन के प्रति बली की भक्ति को दर्शाने के लिए राखी के त्यौहार को बलेवा के नाम से भी जाना जाता है।

राजा पुरु (पोरस) और सिकंदर की पत्नी

जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया, तो भारतीय राज्य आंबी के शासक राजा पुरु, जिन्हें पोरस के नाम से भी जाना जाता है, आपस में उनका युद्ध होने वाला था। राजा पुरु एक कुशल योद्धा थे। तब सिकंदर की पत्नी रोखसाना अपने पति की रक्षा को लेकर बहुत चिंतित थी।अपने पति की रक्षा हेतु उसने राजा पुरु को राखी भेजी और अपने पति की रक्षा का वचन मांगा।

पुरु और सिकंदर के युद्ध के दौरान, राजा पुरु सिकंदर को मारने वाले थे, पर अपनी राखी बहन से किया वादा उन्हें याद रहा। पुरु ने उसको नहीं मारा और अपने वादे और राखी के महत्व को किसी लड़ाई से बड़ा माना।

यमुना और यम अमृत का वरदान

यह राखी की कहानियों में सबसे प्राचीन है और इस दिन मनाई जाने वाले रीति जैसे आरती उतारना ,मिठाई खिला ना, आदी परंपराओं को समझाती है।मृत्यु के देवता यम और यमुना भाई बहन थे। पर 12 वर्ष तक यम ने अपनी बहन से मुलाकात नहीं की थी। यमुना इसी वजह से बहुत दुखी थी।वह अपने भाई को याद करके, उनसे मिलना चाहती थी। देवी गंगा ने यम को उनकी बहन के बारे में याद दिलाया और मिलने की लिए कहा, यमुना खुश हुई और यम का भव्य स्वागत किया। आने पर उसकी कलाई पर राखी बांधी। यम अपनी बहन के प्रेम से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे अमरता प्रदान की। उन्होंने यह भी घोषणा की कि कोई भी भाई जिसने राखी बंधवाई है और अपनी बहन की रक्षा का वादा किया है, वह भी अमर हो जाएगा। उस दिन के बाद से यह परंपरा शुरू हुई। राखी के अवसर पर भाई-बहन से मिलने जाता है और बहन अपनी भाई को दीर्घायु बनाने के लिए उसकी कलाई पर राखी बांधती है। ❐

कहानी

इस वक्त

काम से देर रात बहन घर पर आए तो यह बुराई है। लेकिन बेटा बेवजह ही रात भर आवारागर्दी करे, यह कहां तक उचित है। रात को तकरीबन 8 बजे, वह बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर घर पहुंची। देखा, तो आज उसका बड़ा भाई घर में पहले से ही मौजूद था। आमतौर पर इस वक्त वो घर में कम ही नजर आता है। बहन के घर के अंदर कदम रखते ही वह बोल पड़ा-तुम इस वक्त घर वापस लौट रही हो? हां, ट्यूशन पढ़ा कर घर लौटने में इतना वक्त तो हो ही जाता है। बहन ने जवाब दिया। इस वक्त बाहर कितना अंधेरा होता है, तुम्हें मालूम नहीं क्या? भाई ने तेज स्वर में कहा। हां मालूम है, मगर काम करना भी तो जरूरी है। बहन ने जवाब दिया। मगर इस समय घर लौटना सही नहीं है। शहर का माहौल कितना खराब हो रहा है, तुम जानती नहीं हो? और गली के मोड़ पर वो लफंगे लड़कों का झुंड तो जरूर खड़ा रहता है। अपनी बात पर और जोर देने के लिए वह बोला। हां, इस झुंड में मुझे अक्सर तुम भी नजर आ जाते हो। बहन ने अपने मन में ही कहा। मैं बस इतना कह रहा हूं कि इतना वक्त होने से पहले घर लौटा करो।

इससे पहले बहन उसे कुछ जवाब दे पाती, वह रसोई में खाना पकाती मां को आवाज देकर बोला, माँ, मेरा खाने पर इंतजार मत करना। मुझे आने में देर होगी। यह कहते हुए वह घर से बाहर जाने लगा। तुम कहां जा रहे हो? बहन ने सवाल किया। अपने दोस्तों के पास जा रहा हूं। उसने जवाब दिया। इस वक्त? बहन ने हैरानी से पूछा। हां, रोजाना जाता हूं। तुम्हें कोई परेशानी है क्या? उसने पूछा। नहीं, मगर इस वक्त तो बाहर काफी अंधेरा हो जाता है। बहन ने कहा। मैं जानता हूं। वह कड़े स्वर में बोला।

शहर का माहौल कितना खराब है, तुम्हें तो बेहतर पता होगा और वहां वो गली के मोड़ पर, वो लफंगे लड़कों का झुंड भी खड़ा होगा। बहन ने उसे चेताया। वह चिड़चिड़ाते हुए बोला, यह सब तुम मुझे क्यों बता रही हो? मैं सब जानता हूं।

बहन थोड़ा मुस्कुराते हुए बोली, कुछ नहीं, बस सोच रही हूं। कितनी अजीब बात है ना? क्या? उसने पूछा। यही कि मेरा इस समय, अपना काम खत्म कर घर लौटना सही नहीं और तुम्हारा इस वक्त अपने दोस्तों के साथ फिजूल बाहर घूमने जाना गलत नहीं।

अपनी छोटी बहन से ऐसे जवाब की शायद उसने उम्मीद नहीं की थी, इसलिए वह पहले तो कुछ पल के लिए उसे खड़ा देखता रहा फिर बिना कोई जवाब दिए सिर झुकाए मुख्य द्वार से बाहर चला गया। ❐

समाजोद्धारक श्रीकृष्ण

■ **अरुण देव**

श्रीकृष्ण का चरित्र अलौकिक है। उनके महान जीवन के अनेक पक्ष हैं। उनमें एक है संहार पक्ष। इसे यदि उद्धार पक्ष कहा जाए तो अधिक समीचीन होगा। भगवान कृष्ण ने स्वयं गीता में कहा है–

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृज्याम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

अर्थात् जब-जब धर्म की हानि होती है अधर्म बढ़ जाता है तब भगवान अवतार लेते हैं। सज्जनों की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए वे युगों में स्वयं को अवतरित करते हैं। निस्संदेह परमात्मा का अवतार दुष्टों का संहार करने के लिए ही होता है। श्रीकृष्ण अवतार लेकर भगवान ने दुष्टों को मारने के लिए सबसे अधिक लीला दिखाई। श्रीराम के रूप में भी उन्होंने राक्षस कुल का संहार किया था परन्तु श्रीकृष्ण रूप में तो शैशव से ही उनकी दिव्य लीलाएं प्रारम्भ हो गईं।

श्रीकृष्ण के जन्म से पूर्व ही मथुरा कारागार के सभी प्रहरी सो गए और सभी ताले स्वयं खुल गए। वसुदेव जी उन्हें लेकर गोकुल को चले तो यमुना में बाढ़ आई हुई थी। श्रीकृष्ण के चरण चूम कर यमुना ने स्वयं ही मार्ग दे दिया। यशोदा के समीप श्रीकृष्ण को सुला कर तथा नवजात बालिका को लेकर वे सकुशल-वापस आ गए। इतना ही नहीं भगवान् कृपा से वसुदेव इस समस्त घटनाक्रम को भूल भी गए। बालिका को पाकर कंस ने क्रूरतापूर्वक उसे शिला पर पटकना चाहा तो वह आकाश में उड़ गई और संदेश भी दे गई कि कंस का संहार करने वाला बालक गोकुल में पहुँच चुका है।

पूतना वध

कंस ने राक्षसी पूतना को बुलवाया और गोकुल भेजा। पूतना पूछती फिरी-किसके लाला हुआ है? नन्द बाबा के घर पहुँची तो शिशु श्रीकृष्ण को सोते देखा। पहले यशोदा को बधाई दी फिर मिठाई माँगी और फिर एक भद्र महिला के समान स्नेह प्रदर्शन करते हुए शिशु को गोद में ले लिया। अवसर पाकर जैसे ही एकान्त हुआ तो पूतना ने अपना विष से सना हुआ स्तन श्रीकृष्ण के मुख में डाल दिया। बस! फिर तो श्रीकृष्ण ने दूध के लिए उसके प्राण खींच लिए। उसने छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु भगवान श्रीकृष्ण और गहरे पीते चले गए। छटपटाहट के पश्चात् बेचारी पूतना निष्प्राण होकर गिर गई। छद्म रूप मिट गया और पूतना का असली राक्षसी रूप प्रकट हो गया। वास्तव में भगवान ने उसका उद्धार कर दिया।

शकटासुर वध

शकटासुर का आकार एक बैलगाड़ी जैसा था, जिसके बड़े-बड़े पहियों के नीचे पर्याप्त छाया होती है। उसी की छाया में माता यशोदा ने अपने प्रिय लाल को सुला दिया। शकट पर गोकुल के मटके लदे थे। अचानक शकट नीचे बैठने लगा। माता यशोदा भयभीत हो गई- ''मेरे लाल को बचाओ। गाड़ी गिर रही है।'' तभी देखा लाल का कमाल। लाल कन्हैया ने एक लात मारी और शकट सैकड़ों फुट ऊंचा आकाश में उड़ गया। मकानों और वृक्षों को तोड़ता हुआ राक्षस रूप में धरती पर गिरा। शिशु कृष्ण ने शकटासुर को एक पल में ही मार दिया।

तृणावृत असुर का संहार

तृणावृत का अर्थ ही है तूफान। अकेले आँगन में बैठे श्रीकृष्ण को तृणावृत राक्षस ने घेर लिया। सारे गोकुल में भयंकर आँधी तूफान उमड़ पड़ा। इधर यशोदा ने देखा कृष्ण वहाँ नहीं है जहाँ बिठाए थे। माँ ने शोर मचा दिया। सभी उन्हें खोजने लगे। पर कृष्ण का कहीं पता नहीं। तृणावृत श्रीकृष्ण को आकाश में उड़ा ले गया, उसने उन्हें अपनी पीठ पर लाद लिया था। फिर भगवान ने अपना भार बढ़ाना आरम्भ

किया। शनैः-शनैः भार बढ़ता गया और इतना बढ़ गया कि दैत्य उसे सहन न कर सका। अन्त में वह आकाश से धरती पर आ गिरा। उसकी लाश पर शिशु श्रीकृष्ण मजे से खेल रहे थे। उसके उपरान्त गोकुल वासियों ने गोकुल ग्राम छोड़ दिया और वृंदावन आ गए।

वत्सासुर वध

ग्वाल बालों के साथ कृष्ण भी अपनी गाय चराने जाते। खेलते, खाते और मुरली बजाते। एक दिन उन्होंने देखा कि गायों के बीच में एक सुन्दर बलवान बछड़ा उछल रहा है। श्रीकृष्ण पहचान गए कि यह असुर है। श्रीकृष्ण बोले- भैया बलदाऊ यह वत्स तो आपके हिस्से का है। बलराम समझ गए। उन्होंने बछड़े के पीछे दौड़ लगाई। उन्होंने पूंछ पकड़ कर उसे घुमाया और धरती पर दे मारा। तुरन्त उसके प्राण पखेरू उड़ गए। वत्सासुर परलोक सिधार गया। उसका भी संहार नहीं उद्धार हो गया।

बकासुर वध

एक दिन भगवान श्रीकृष्ण तथा बलराम ग्वाल बालों के साथ यमुना तट पर गउएं चरा रहे थे। बालकों ने बताया कि देखो एक बगुला यमुना किनारे बैठा है। श्रीकृष्ण को देखते ही वह झपटा और चोंच में साबुत ही निगल गया। बलदाऊ और ग्वाल बाल भी उसके पेट में समा गए। श्रीकृष्ण ने अपने शरीर में ऊर्जा भरनी शुरू कर दी। गर्मी इतनी अधिक बढ़ गई कि वह श्रीकृष्ण को उगलने के लिए विवश हो गया। जैसे ही श्रीकृष्ण पेट से चोंच में आए उन्होंने बगुले की चोंच के दोनों सिरे पकड़ कर बलपूर्वक चीर दिया।

अघासुर का संहार

अघासुर भी कंस के द्वारा भेजा गया था। वह अजगर बना अपना भयंकर मुँह फैलाए बैठा था। जो बालक अजगर के मुँह के पास पहुँच जाते वह एक गहरे श्वास के साथ उन्हें सटक जाता। श्रीकृष्ण सावधान हो गए पर सखाओं को तो बचाना ही था। अतः स्वयं भी अजगर के मुख में प्रवेश कर गए। अघासुर ने अपना मुँह तुरन्त बंद कर लिया ताकि सभी को भींच कर चबा सके। श्रीकृष्ण ने अपना आकार बढ़ाना प्रारंभ किया। कुछ पल में ही वे इतने बड़े हो गए कि अजगर की सांस ही रुक गयी। अघासुर प्राण-हीन होकर गिर पड़ा, उसका मुंह फैला रह गया। श्रीकृष्ण ने अपना आकार छोटा किया और समस्त ग्वाल-बालों के साथ उसके मुख से बाहर निकल आए।

कालिया नाग नाथन

यमुना तट पर एक घाट बिल्कुल बन्द ही हो गया था। वहां कालिया नाग के विष का भारी प्रभाव था। एक बार खेलते हुए गेंद उस कालीदह घाट में चली गई। श्रीकृष्ण कालीदह में कूद गए। माता यशोदा और नन्द बाबा तक खबर पहुँच गई। गांव का गांव वहाँ पर जमा हो गया परन्तु किसी की हिम्मत नहीं हुई कि काली दह में कूद जाए। रोना-धोना मचा रहा। उधर श्रीकृष्ण कालिया नाग के मस्तक पर चढ़ गए। उसके फनों पर नृत्य करने लगे। वह छटपटाता रहा परन्तु अपने ही फन के ऊपर उसका कुछ जोर न चला। निढाल होकर वह जल के ऊपर आ गया। श्रीकृष्ण ने उसके फनों को नाथ रखा था और उस पर खड़े बंशी बजा रहे थे। ब्रजवासी देखते ही जय-जयकार कर उठे। प्रसन्नता से सभी नाचने लगे। श्रीकृष्ण कूद कर बाहर आ गए और कालिया नाग यमुना को छोड़कर कहीं और चला गया।

प्रलंवासुर संहार

एक बार श्रीकृष्ण बलराम घुड़सवारी का खेल खेल रहे थे। दोनों की अलग-अलग टोली थी। प्रलंवासुर ने भी एक ग्वाले का रूप धारण किया और श्रीकृष्ण की टोली में सम्मिलित हो गया। अन्तर्यामी श्रीकृष्ण जान गए और जानकर हार गए। बलराम की टोली जीत गई। ग्वाला बने प्रलंवासुर पर बलराम जी बैठ गए। उसने सोचा इसी को लेकर भाग जाता हूँ। अलग ले जाकर मार डालूँगा। श्रीकृष्ण ने संकेत दिया- बलदाऊ समझ गए और अपना भार बढ़ाने लगे। उसने अपना असली रूप धारण किया और आकाश में उड़ने लगा। तब बलराम ने उसे मार डाला।

शंखचूड़ यक्ष का उद्धार

श्रीकृष्ण की मधुर बंशी की तान गोप-गोपियों का मन मोहित कर रही थी। अतः श्रीकृष्ण के पीछे वे बेसुध से चलते जा रहे थे। सहसा शंखचूड़ नाम का यक्ष एक गोपी को उठा कर उत्तर दिशा की ओर भागा। गोपी ने भय से कन्हैया को

पुकारा। कन्हैया ने एक घूंसा उसके सिर पर मारा और वह धराशाई हो गया।

अरिष्टासुर वध

कंस द्वारा भेजा गया अरिष्टासुर बैल बनकर गायों में आ मिला। ब्रज में प्रवेश करते ही उसकी शरारतें असहनीय हो गईं। गोपी ग्वाले भयभीत होकर भागने लगे। श्रीकृष्ण ने उन्हें रोका और स्वयं उस दैत्य के आगे जा खड़े हुए। वह तो उसी अवसर की प्रतीक्षा में था। सींग आगे करके दौड़ता हुआ रौंदने के लिए आया। श्रीकृष्ण जी ने उसके सींग पकड़ कर ऐंठा और धरती पर पटक दिया।

हाथी कुवलयापीड़ को फेंका

कंस ने श्री अक्रूर जी के द्वारा कृष्ण बलराम को मथुरा बुलवाया। यह उसका षड्यंत्र था। यज्ञशाला में धनुष यज्ञ और कुश्ती का आयोजन किया गया था। द्वार पर कुवलयापीड़ खड़ा किया गया। श्रीकृष्ण ने महावत को कहा– भाई, हाथी को हटा लो। महावत को कंस का आदेश था। उसने हाथी को कृष्ण बलराम को कुचलने हेतु उकसाया। श्रीकृष्ण ने अपना चमत्कार दिखाया और उसका काम तमाम कर दिया।

कंस चाणूर मर्दन

कंस की सभा के दो विशालकाय पहलवान थे मुष्टिक और चाणूर। सभागार में प्रवेश करते ही दोनों ने उन्हें ललकारा। मुष्टिक बलराम से भिड़ गया और चाणूर श्रीकृष्ण से भिड़ा। दोनों भाइयों ने उनका भी बेड़ा पार किया।

कंस भयभीत तो हो ही चुका था। शेष पहलवान भी भाग गए थे। घबराहट में उसने अपनी तलवार खींच ली। कृष्ण तो शस्त्रहीन थे। उन्होंने कंस के केश पकड़कर धरती पर पटक दिया। कूदकर उसकी छाती पर चढ़ गए। उनके छाती पर चढ़ते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए। भगवान श्रीकृष्ण ने पापी कंस को भी मुक्त कर दिया।

भौमासुर की समाप्ति

वह कन्याओं को कैद में डाले रखता। उसका प्रण था कि एक लाख होने पर मैं सबसे एक साथ विवाह करूँगा। उसकी कैद में कन्याओं की संख्या सोलह हजार एक सौ हो चुकी थी। उसके अत्याचार शायद इससे भी अधिक हो चुके थे। इन्द्र ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि इस भौमासुर का कोई उपाय कीजिए। तब श्रीकृष्ण ने पहले उसकी सेना और फिर बाद में उसका अन्त कर दिया। कारागृह से सोलह हजार एक सौ कन्याओं को मुक्त किया तो उन सभी ने निवेदन किया– ''प्रभो, यद्यपि भौमासुर ने हमसे विवाह नहीं किया। हम सभी पवित्र हैं, फिर भी समाज में हमें कौन अपनाएगा? किसी को हमारी पवित्रता पर भरोसा न होगा। हम कहाँ जाएं।'' श्रीकृष्ण ने उन सभी को द्वारिका चलने का आग्रह किया तथा जो अपने परिवार में जाना चाहे उसे जाने को कहा। उनमें एक भी वापिस अपने घर नहीं गई। द्वारिका ले जाकर भगवान श्रीकृष्ण ने सबसे एक साथ विवाह कर लिया। इस प्रकार उनकी सोलह हजार एक सौ आठ रानियां हुईं।

कालयवन और जरासंध का अंत

दोनों मित्र थे। बार-बार मथुरा पर आक्रमण करते थे। एक बार कृष्ण कालयवन के सामने आए और निहत्थे एक ओर भाग निकले। कालयवन पीछे भागा। श्रीकृष्ण एक गुफा में घुस गए। गुफा में एक व्यक्ति सोया हुआ था। उन्होंने अपना दुपट्टा उसको ओढ़ा दिया और स्वयं पास ही छिप गए। कालयवन ने समझा श्रीकृष्ण यहां छिपकर सो रहे हैं। उसने जोर से लात मारी। सोया हुआ व्यक्ति उठा और जैसे ही उसने कालयवन को देखा, क्षण भर में कालयवन भष्म हो गया। इसके पश्चात् श्रीकृष्ण ने जगे हुए मुचकुन्द को अपना परिचय दिया। मुचकुन्द सूर्यवंशी राजा था और त्रेता युग से उस गुफा में सो रहा था। देवों की सहायता के बाद उसने वरदान स्वरूप चैन की नींद मांगी थी। उसे वरदान मिला था कि जो कोई उसे जगाएगा वह मुचकुन्द की दृष्टि पड़ते ही भष्म हो जाएगा। जरासंध को बार-बार हरा कर भी श्रीकृष्ण इसीलिए छोड़ते रहे कि वह हर बार नई राक्षस सेना लाए और बार-बार उनका संहार करता रहूँ। जब उसको दण्ड देने का समय आ गया तो भगवान भीम, अर्जुन को साथ लेकर उसके पास पहुंचे। भीम से मल्ल युद्ध उसने स्वयं स्वीकारा। श्रीकृष्ण ने एक तिनका चीर कर संकेत किया और जरासंध के बीच में से दो टुकड़े कर दिए। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने बल, बुद्धि, युक्ति और माया से कई अन्य दुष्टों का भी संहार किया। अभिप्राय यह है कि किन दुष्टों को मारकर भगवान धरती का भार उतारते हैं? जिनके पाप, अत्याचारों से जनता पीड़ित होने लगती है। जन साधारण की रक्षा भगवान करते हैं। धर्म की रक्षा भगवान करते हैं अधर्म का नाश करते हैं। अहंकारी का प्रभु नाश करते हैं। लोभ, मोह और दूसरों को दु:ख देने वाले दुष्टों को भगवान दण्ड देते हैं। जन्माष्टमी के इस पावन अवसर पर हम सभी प्रार्थना करें कि कलियुग के दैत्यों का भी भगवान शीघ्र संहार करें। ❐

'हरी भरी सोसाइटी' के संस्थापक श्री लोकेश जी

'हरित भारत का सपना हो रहा साकार'

पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है। जब चहुंओर शहरीकरण और औद्योगीकरण की दौड़ में पर्यावरणीय संकट हमारे अस्तित्व को ही चुनौती दे रहा हो, तब कुछ संवेदनशील पर्यावरण प्रहरी बन समाज और प्रकृति के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए सराहनीय पहल कर रहे हैं। ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी है 'हरी भरी सोसाइटी' की, जिसकी आरंभिक यात्रा नांगलोई क्षेत्र में कुछ पेड़ों से हुई और अब यह एक सशक्त पर्यावरणीय आंदोलन बन चुकी है। इस पहल के पीछे प्रेरक व्यक्तित्व हैं इसके संस्थापक श्री लोकेश जी, जिन्होंने अपने सहयोगी श्री गोपाल जी के सहयोग से एक बंजर भूमि को 'सुजलाम सुफलाम' करने का स्वप्न संजोया और उसे साकार भी किया। संजय शांडिल्य (पर्यावरण संरक्षण गतिविधि) ने एक विशेष साक्षात्कार में श्री लोकेश जी से जाना कि कैसे एक छोटा-सा विचार एक बड़े अभियान में बदल सकता है, किस तरह की चुनौतियों का सामना करते हुए उन्होंने प्रकृति से अपने प्रेम को कर्म मंन बदला, और भविष्य में उनके क्या लक्ष्य हैं। प्रस्तुत हैं उस साक्षात्कार के प्रमुख अंश:

प्रश्न: 'हरी भरी सोसाइटी' शुरू करने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त की? और कब की?

उत्तर: प्रेरणा 2018 में मिली, जब नांगलोई मेट्रो स्टेशन के नीचे के निर्जीव भूखंड को देखकर लगा कि यहाँ हरियाली लाई जा सकती है। मैने और गोपाल जी ने मिलकर पेड़ लगाने की शुरुआत की।

प्रश्न: संस्था की स्थापना के समय कौन-कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ सामने आईं और आपने उनका समाधान कैसे किया?

उत्तर: शुरुआत में पानी की व्यवस्था, संसाधनों की कमी और लोगों की भागीदारी सबसे बड़ी चुनौतियाँ थीं। पानी के लिए जिम (व्यायामशाला) से बाल्टी भर-भर कर लाए, तत्पश्चात समाज के बंधुओं ने रिक्शा और पानी की टंकी भेंट की। धीरे-धीरे और लोग जुड़ते गए।

प्रश्न: आपकी संस्था किन-किन प्रमुख गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रही है?

उत्तर: प्रतिदिन सुबह पेड़ लगाना, उनकी देखभाल करना, पानी देना, ट्री एम्बुलेंस चलाना, ट्री गार्ड लगवाना, सभी के लिए नि:शुल्क बर्तन बैंक और स्थानीय लोगों को जागरूक करना।

प्रश्नः आप पर्यावरण से कैसे जुड़े और इसने आपकी सोच को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तरः बच्चों को स्कूल छोड़ते समय ऊसर भूमि देखकर पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी। हरियाली लाने के प्रयासों ने समाज के लिए कुछ करने की सोच को बलवती किया।

प्रश्नः आपकी संस्था का नाम 'हरी भरी सोसाइटी' बहुत ही सारगर्भित है। इसके पीछे कोई विशेष विचार?

उत्तरः उद्देश्य था कि सोसाइटी के हर सदस्य के प्रयास से क्षेत्र हरा-भरा हो, इसलिए नाम 'हरी भरी सोसाइटी' रखा गया।

प्रश्नः आपके अनुसार, आज के समाज में पर्यावरण के प्रति सबसे बड़ी लापरवाही क्या है?

उत्तरः सबसे बड़ी लापरवाही है पेड़ों की कटाई और नई पौध न लगाना, साथ ही प्रदूषण के प्रति घोर उदासीनता।

प्रश्नः स्थानीय निवासियों या युवाओं की भागीदारी भी संस्था के कार्यों में होती? किस प्रकार से?

उत्तरः हाँ, स्थानीय निवासी और युवा नियमित रूप से पेड़ लगाने, पानी देने और जागरूकता फैलाने में भाग लेते हैं। मासिक श्रमदान और अर्थदान भी करते हैं।

प्रश्नः अब तक के कार्यों में आपको कौन-सा प्रोजेक्ट सबसे अधिक सफल और प्रेरणादायक लगा?

उत्तरः नांगलोई डिपो से मुंडका तक और नजफगढ़ रोड पर 12,000 पेड़ लगाना सबसे सफल और प्रेरणादायक रहा।

प्रश्नः क्या आप किसी विशेष अनुभव को सांझा करना चाहेंगे, जिसने आपको गहराई से छुआ?

उत्तरः जब लॉकडाउन में भी एक दिन काम नहीं रुका और समाज के लोग हर परिस्थिति में साथ रहे, वह अनुभव बहुत प्रेरणादायक था।

प्रश्नः भविष्य में 'हरी भरी सोसाइटी' के क्या लक्ष्य और योजनाएँ हैं?

> **'हरी भरी सोसाइटी' केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक सोच है एक चिरंतन भारतीय विचार है- एक ऐसा प्रयास जो यह दिखाता है कि यदि संकल्प दृढ़ हो और साथ में समाज का सहयोग हो, तो पर्यावरण संरक्षण कोई असंभव कार्य नहीं। श्री लोकेश जी और उनकी टीम ने न केवल पेड़ लगाए, बल्कि उनके संरक्षण को भी जीवन का उद्देश्य बना लिया। उनका यह समर्पण हमें सिखाता है कि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर एक बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। जो केवल सोच में नहीं, बल्कि हमारे कर्मों में दिखे।**

उत्तरः जहाँ भी संभव हो, पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना। पर्यावरण और आसपास प्लास्टिक तथा अन्य प्रदूषण को कम करना मुख्य लक्ष्य है।

प्रश्नः जो लोग पर्यावरण कार्य से जुड़ना चाहते हैं, उनके लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तरः जो लोग पर्यावरण कार्य से जुड़ना चाहते हैं, वे अपने खास अवसरों पर हमारे साथ पौधारोपण करें, हरी भरी सोसाइटी उन पेड़ों की देखभाल करेगी। छोटे-छोटे प्रयास भी बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं, हर कोई अपनी क्षमता अनुसार योगदान दे सकता है।

प्रश्नः आप कार्यकर्ताओं या अन्य एन.जी.ओ. को क्या सुझाव देना चाहेंगे जो पर्यावरण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं?

उत्तरः निरंतरता और सामूहिकता (टीम वर्क) सबसे आवश्यक है। समाज को जोड़ें, संसाधनों का सही उपयोग करें, उपभोग नहीं और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। चुनौतियाँ अवश्य आएँगी, लेकिन धैर्य और समर्पण से हर कठिनाई सरल सहज हो सकती है। अपने कार्यों में पारदर्शिता रखें और स्थानीय लोगों की भागीदारी को बढ़ावा दें, तभी पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य सफल हो पाएगा।

प्रश्नः अंत में आप अपनी सफलता का श्रेय किसको देना चाहेंगे?

उत्तरः मैं अपनी पूरी टीम के सदस्यों को श्रेय देना चाहूंगा श्री राजेश शर्मा, श्री आशीष जैन, श्री विजय जैन, श्री सुनील, श्री दौलत राम मलिक, श्री अमरनाथ पांडे, श्री ललित, श्री प्रवीण, श्री टिंकू, श्री ओमप्रकाश जाजोरिया, श्री प्रदीप, श्रीमती तान्या शर्मा, श्रीमती मोनिका, श्रीमती डिंपल, श्रीमती जूही झा एवं श्री रोहित जी, श्री मनोज सैनी जी इन सब के निरंतर सहयोग एवं भागीदारी के बिना यह संभव नहीं था। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह अभियान यूं ही चलता रहे। ❒

प्रदूषण से जंग को तैयार कर रहे पौध की फौज

प्रदूषण से दिल्ली की जहरीली हो चुकी आबोहवा के बीच युवाओं की एक टोली राहत की पौध तैयार करने में जुटी है। ईस्ट लोनी रोड स्थित एमआईजी फ्लैट में रहने वाले युवाओं ने 'नीम टीम' नाम से मुहिम चलाकर पर्यावरण संरक्षण की पहल की है। यह टोली सड़क किनारे व पार्कों में न सिर्फ सैकड़ों नीम की पौध लगा चुकी है, बल्कि पेड़-पौधों का संरक्षण भी करती है। साथ ही पॉलीथिन का सही इस्तेमाल कैसे करें, इसके बारे में भी जागरूक करती है।

मुहिम की शुरुआत सरकारी अधिकारी गौरव दत्त ने की है। पिछले छह वर्षों से गौरव पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रहे हैं। उनके इस प्रयास को देखकर अन्य लोग भी जुड़ते गए और उन्होंने 'नीम टीम' नाम से एक टोली बनाई। गौरव ने बताया कि उनके घर के सामने एक बेजान पार्क था, जहां हरियाली के नाम पर कुछ नहीं था। तब उन्होंने पार्क में हरियाली लाने का संकल्प लिया।

वह पार्क में हरियाली लाने के लिए आफिस जाने से पहले हर सुबह दो घंटे पार्क में मेहनत करते हैं। वे नीम के पेड़ इसलिए अधिक लगाते हैं, क्योंकि नीम के पेड़ पर जो निबोरी होती है, अगर उसे जीमन में रोप दिया जाए तो एक नया पौधा बन जाता है। इसके साथ ही वह पीपल का पौधा भी लगाते हैं, क्योंकि पीपल 24 घंटे ऑक्सीजन देता है। पार्क में सूखे पत्तों को जमा करके एक गड्ढे में दबा कर खाद की तरह उपयोग करते हैं।

बातचीत में गौरव ने बताया कि प्लास्टिक ही पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित करती है। आजकल लोग प्लास्टिक की थैली में पैक दूध ज्यादा खरीदते हैं, वही थैलियां नालियों को जाम करती हैं। इसके लिए उन्होंने उपाय निकाला कि वह लोगों के घरों से दूध की थैली जमा करके उन थैलियों में खाद और मिट्टी में नीम के पेड़ की निबोरी डालकर पौध लगाएंगे। गमले में अगर पौधे रोपने हैं तो पैसे खर्च करने पड़ेंगे, लेकिन थैली में रोपने के लिए एक रुपया खर्च नहीं करना पड़ेगा। जब पौधे उग जाते हैं, तो वह लोगों को वितरित कर देते हैं या पार्क या डिवाइडर पर रोप देते हैं। उन्होंने एक रिक्शा भी लिया जिस पर पानी की टंकी रखकर सिंचाई करते हैं। ❐

-जागरण समाचार से साभार

स्वतंत्रता दिवस पर युवकों से अपील

■ गंगा प्रसाद सुमन

सुबुद्धि और सुहृदय का संयोग ही मानव को सब जीवों में श्रेष्ठतम् प्रमाणित करता है। मानव की चारों अवस्थाओं में युवावस्था स्वर्णमयी अवस्था है। इसी अवस्थपा में तन-मन-व्यक्तित्व का निर्माण, ओजस्वी भावनाओं और ज्ञानार्जन के सोपान पर चढ़ा जा सकता है। यदि किसी जाति या राष्ट्र के इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त करनी है तो वहां के युवावर्ग का निरीक्षण कीजिए, किसी भी रचनात्मक कार्य को उठाइए, वह तब तक ख्याली-पुलाव ही रहेगा जब तक कि राष्ट्र के आधार युवक सहयोग प्रदान न करें। युवक ही राष्ट्र के आधार हैं, भविष्य हैं, भावी धरोहर हैं, नींव हैं।

युवावस्था का मापदण्ड न केवल आयु से है, अपितु हृदय में उत्साह, लगन, उन्नत मनोबल व जीवन्त प्राण से है। आयु तो है 25 वर्ष और उसका जीवन है आलस्यमयी, शिथिल, निष्क्रिय, अनुशासनहीनता और विलासता के पंक में फंसा हुआ। दूसरी ओर है 60 वर्षीय जीवन श्वत-केश, कृशकाय लेकिन उसके मन मानस में है उत्साह, उमंग, जोश, लगन और कुछ करने की तमन्ना हिलोरें ले रही हों। ऐसे लोग श्रेष्ठतर हैं उन युवकों से। युवक तो वह है जो मस्तिष्क से भ्रम, हृदय से भय और इन्द्रियों से भोगों को भगा दे।

भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में जब तक युवकों ने अपनी शक्ति का विनियोग नहीं किया तब तक संग्राम सफलता के द्वार तक नहीं पहुंच सका। चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, बटुकेश्वर दत्त, मदनलाल ढींगरा, अशफाक उल्ला खां, सुभाषचन्द्र बोस आदि जैसे युवक हथेली पर शीश रखकर आजादी प्राप्ति हेतु घर से निकल पड़े थे। युवकों की प्राणाहुति से मुरदों में भी प्राणों का संचार हो जाता है।

आज देश की विषम परिस्थितियों की आलोचना करने से काम नहीं चलेगा। आज के राजनेताओं की धूमिल छवि वर्णन करने से समय नष्ट करना है। जो नेता विभिन्न अपराध वृत्तियों में नहाए हुए हों, भला वे देश को क्या दिशा प्रदान कर सकेंगे? लोकसभा का दृश्य सब्जी मण्डी जैसा बन गया है, नाविक नाव में ही छेद करते जा रहे हैं। तपस्वी जीवन मिल नहीं पा रहे। वोट की राजनीति है। द्रौपदियों का चीर हरण हो रहा है और सभी महारथी आंख और मुंह बन्द किए हुए हैं, साम्प्रदायिकता और उग्रवाद का नागफन फैल रहा है। पन्द्रह अगस्त, 1947 को स्वतन्त्रता तो मिली लेकिन आशाओं का पुल वृक्ष पर दूर ही टंगा हुआ है। अत्याचारी की चमड़ी गोरी हो या काली, देशी हो या विदेशी अत्याचारी तो अत्याचारी ही कहलाएगा।

क्रान्ति की तो आज भी आवश्यकता है जो युवकों द्वारा ही संभव है। क्रान्ति का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वे

सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट कर दें, अपितु सृजनात्मक, रचनात्मक क्रान्ति की आवश्यकता है। जोश के साथ होश भी हो।

पहली क्रान्ति तो व्यक्तिगत ही है जिसमें युवक अपने आप से प्रश्न करें कि हम किधर जा रहे हैं। स्वभाव, दोष, व्यसन-दोष और चरित्र दोष तो हमने नहीं पाल रखे। हमने अपने व्यक्तित्व को गिरवी तो नहीं रख दिया। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को हम कितना पहचान पाए हैं? मानस में मंथन कर स्वयं मूल्यांकन करें कि हमारे जमा खाते में क्या है? अपना जीवन ही अपने आप में पावन निधि है। व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र सुधरेगा।

दूसरी क्रान्ति सामाजिक है। युवक ही समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। समाज में फैले हुए अंधविश्वास, पाखण्ड कुरीतियों का खण्डन निर्भयता के साथ करें। अपने विवाह जैसे पवित्र संस्कार को तो स्वयं शुद्ध बनाएं। दहेज आदि कुरीतियों पर कुठाराघात करें। पाखंडियों के जाल में न फंसें। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का सांस्कृतिक प्रदूषण हो रहा है। सामाजिक क्रान्ति की प्रक्रिया में धीमी गति स्वाभाविक है, लेकिन गति में सतत् वेग चाहिए।

युवक जहां भी सेवारत है, उस परिवेश को ही सुन्दर, मधुर और मर्यादित बनाएं। अनैतिकता, भ्रष्टाचार से परे रहें। यह माना कि ईमानदार युवक को आज के परिवेश में कठिनाइयां अवश्य आएंगी और लोगों द्वारा वे हास्यास्पद भी बनेंगे, किन्तु सूर्य कुछ देर तक ही बदली की ओट में छिपता है, लेकिन जब वह अपनी किरणों को प्रस्फुटित करता है तो बदली अपने आप से ही छंट जाती है। अपने कर्तव्य, कर्म को निष्ठा और ईमानदारी से करना ही राष्ट्र-भक्ति है। सामाजिक व राजनैतिक अवस्था पर आपका अधिकार है।

आज स्वतंत्रता की देवी युवकों को राष्ट्रीय जागरण के लिए आह्वान कर रही हैं। पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि दीर्घावधि तपोमय संघर्ष के बाद जो स्वतन्त्रता देवी विजय का हार लेकर आई थी वह तुम्हारे हाथों में सुरक्षित रहे। 'मातृभूमिः पुत्रोअहं पृथिव्या' की भावना हृदय में समांकित हो। यदि अपने को प्राणवान सिद्ध करना है तो प्रतिकूलताओं को चीरते हुए अनुकूलताओं को गले लगाना है और नए उत्साह के साथ कर्म क्षेत्र में निज चरण बढ़ाने हैं। युवकों को अभीष्ट लक्ष्य अवलोकन करते हुए गिर-गिर उठना है, फिसल-फिसल कर संभलना है, हट-हट कर आगे बढ़ना है। अपने लक्ष्य रूपी शोले को धधकाना है। सागर तीर बैठे हुए हनुमान की भांति अपनी शक्ति को पहचानना है। ❐

राखी

– सुमनजीत

नेहपूर्ण ये डोर पहुंचा कर आसीस,
डूब गई अशुअन में कि मैं ना सही ये डोर तो तुझसे मिली है।

भर कर ढेर सी खुशियां भाई के माथे पर लगा वो तिलक
दिनकर की लालिमा सा चमका होगा चेहरा
यही सोच आज मुस्कान खिली है।

पावन पर्व सकुशल आशाएं सम्मोहित करें,
हर बार कि भाई बहन के असीम स्नेह के दर्शन को
धरा भी घर से निकली है।

अटूट बंधन हठी मन आतुर कि अंबर से भी ऊंचा शिखर हो तेरा
प्रार्थना यही हर बार हृदय से निकली है। ❐

गुरु पूर्णिमा और गुरु दक्षिणा की प्रेरणा

■ मानवेन्द्र

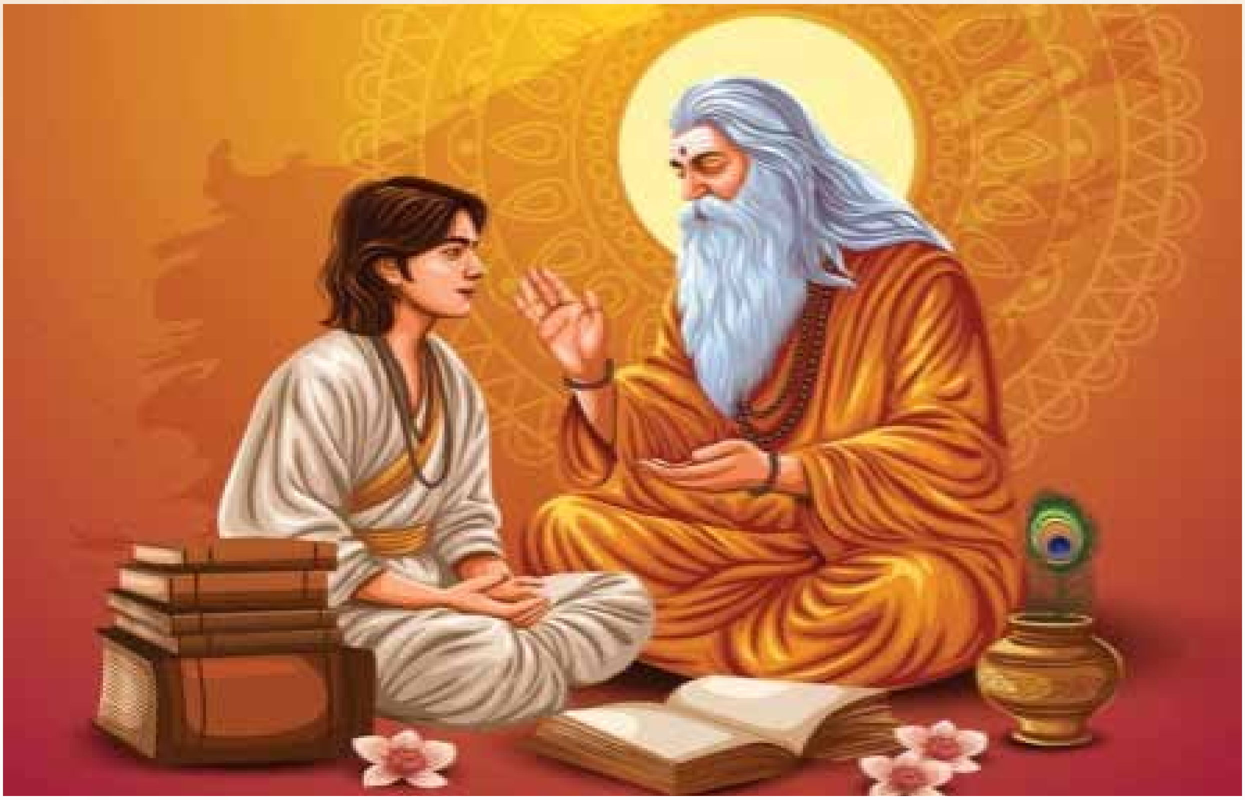

हम गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर के समीप हैं, जो हमारी संस्कृति में ज्ञान, मार्गदर्शन और समर्पण का प्रतीक है। यह दिन हमें अपने मूल्यों पर मनन करने और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को पुन: स्मरण करने का अवसर देता है।

संस्कार और कुटुंब प्रबोधन

हमारी इस सांस्कृतिक विरासत में, संस्कारों का महत्व सर्वोपरि है। ये संस्कार ही हमें सभ्य नागरिक बनाते हैं, और परिवार इस संस्कार-निर्माण की पहली पाठशाला है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी कुटुंब प्रबोधन के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपनी महान परंपराओं और मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है। क्योंकि, एक सुसंस्कारित परिवार ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण करता है। हिन्दू समाज में किसी भी उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

शिक्षा और विमर्श

शिक्षा, व्यक्ति और राष्ट्र के विकास के लिए अपरिहार्य है। यह हमें ज्ञान देती है, विचार क्षमता बढ़ाती है और उत्तम नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। संघ शिक्षा के महत्व को भलीभांति समझता है और इस दिशा में निरंतर कार्यरत है। साथ ही, स्वस्थ विमर्श भी समाज के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है। विचारों के आदान-प्रदान से सत्य की राह खुलती है और समस्याओं का समाधान संभव होता है। हमें सदैव सकारात्मक और रचनात्मक चर्चा के लिए तैयार रहना चाहिए। बिना गुरु के ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। जीवन को सही दृष्टि गुरु के मार्गदर्शन से मिलती है। इस सन्दर्भ में 'गु' का अर्थ है अन्धकार और 'रु' का अर्थ है मिटाने वाला, अर्थात गुरु वह है जो अज्ञान के अन्धकार को मिटाता है। मां हमारी प्रथम गुरु हैं, और तत्व को भी गुरु के रूप में स्वीकार करने की हमारी परंपरा रही है। गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन ही समर्पण की पद्धति है। जिसे गुरु माना जाए, उसकी नित्य पूजा और उसके गुणों को अपने अन्दर समाहित करना आवश्यक है।

'पतत्वेष कायो' -शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समर्पण गुरु पूजा के लिए आवश्यक है।

सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य

हमारा भारत देश विविधताओं से भरा है, और इसकी एकता व अखंडता बनाए रखने के लिए सामाजिक समरसता अत्यंत आवश्यक है। हमें जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के बंधनों से ऊपर उठकर प्रेम और सद्भाव से रहना होगा। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर, हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, कानून का सम्मान करना चाहिए और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी आचरण

आज पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर चुनौती है। हमें प्रकृति का सम्मान करते हुए इसके संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करने होंगे। इसी प्रकार, स्वदेशी आचरण अपनाना भी हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर और अपनी संस्कृति से जुड़े रहकर हम आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान कर सकते हैं।

जिस प्रकार वृक्ष निरन्तर कार्बन डाइऑक्साइड को लेते हुए आक्सीजन बाहर छोड़ते हुए सूर्य की सहायता से अपना आहार तैयार कर लेते हैं। उनके आक्सीजन यानी प्राणवायु छोड़ने के कारण मानव जी सकता है। मानव का जीवन वृक्षों पर आधारित है अन्यथा सृष्टि नष्ट हो जाएगी। उसी प्रकार, स्वयंसेवक भी समाज और राष्ट्र के लिए उसी निष्ठा और समर्पण से कार्य करते हैं। वे अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर, नि:स्वार्थ भाव से समाज की उन्नति और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। जिस प्रकार वृक्ष हमें प्राणवायु देकर जीवन प्रदान करते हैं, उसी प्रकार स्वयंसेवक अपने कार्यों, विचारों और समर्पण से समाज में सकारात्मकता, सेवा और राष्ट्रभक्ति की भावना को पोषित करते हैं। उनकी कर्तव्यनिष्ठा समाज को एकजुट करती है, आपसी सहयोग को बढ़ावा देती है और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि स्वयंसेवकों की यह निस्वार्थ सेवा और कर्तव्यनिष्ठा न हो, तो समाज और राष्ट्र कमजोर हो सकते हैं।

एक कहावत है- "तेल जले, बाती जले-लोग कहें दीप जले।''

अर्थात् जब दीप जलता है हम कहते हैं या देखते हैं कि दीप जल रहा है, लेकिन सही अर्थ में तेल जलता है, बाती जलती है, वे अपने आपको समर्पित करते हैं तेल के लिए।

गुरु पूर्णिमा और गुरु दक्षिणा की प्रेरणा

यह गुरु पूर्णिमा का पवित्र अवसर हमें इन सभी मूल्यों और कर्तव्यों के प्रति अपनी निष्ठा को दोहराने का अवसर प्रदान करता है। आध्यात्मिक विद्या का उपदेश देने वाले और ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाले गुरु को साक्षात परम ब्रह्म कहा गया है। हिन्दू धर्म में गुरु और परमात्मा के प्रति एक समान श्रद्धा भाव है -

"यस्य देवे पराभक्ति: यथा देवे तथा गुरो:''

हम गुरु पूर्णिमा कब और क्यों मानते हैं, यह गुरु के प्रति हमारी श्रद्धा और समर्पण का ही प्रतीक है। बालक जन्म से ही अनेक ऋणों को लेकर जन्म लेता है, और गुरु का ऋण उनमें से एक महत्वपूर्ण ऋण है। संस्कृति क्या है? नि:संदेह, समर्पण और श्रद्धा हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने व्यक्ति के स्थान पर परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु के रूप में स्वीकार किया है। ध्वज की पृष्ठभूमि में राष्ट्र का दीर्घकालीन गौरवशाली इतिहास, श्रेष्ठ परम्पराएँ, जीवन दृष्टि और समाज के दीर्घकालीन लक्ष्य दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए ध्वज मार्गदर्शक एवं प्रेरणा का केन्द्र होता है। भगवा ध्वज त्याग अर्थात समाज हित में सर्वस्व अर्पण करने वालों का प्रतीक है। यह हिन्दुत्व का भी प्रतीक है, क्योंकि सभी मत-पन्थ-सम्प्रदायों में यह स्वीकार्य है। दुनिया में ज्ञान का पहला प्रभात भारत ने देखा और उस दिव्य प्रात: काल के सुनहरे रंगों में रंगकर जो ध्वज भारतीयों ने लहराया, वही भगवा ध्वज के नाम से विख्यात है। सूर्यनारायण और उनका भूतल का प्रतिनिधि अग्निनारायन, ये दोनों अपने समाज के जागृत देवता हैं। इन देवताओं की उत्कट भक्ति भावना में भगवा ध्वज का उदय हुआ। ऋग्वेद का काल दस हजार वर्ष पूर्व का है, उस समय भारतीय आर्यों का जीवन राष्ट्र की दृष्टि से अत्यन्त सुगठित, वैभव सम्पन्न तथा ज्ञान और चरित्र की दृष्टि से उन्नत था। परम पवित्र भगवा ध्वज हमें त्याग और समर्पण की प्रेरणा देता है। किसी के उपकार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का आधार समर्पण ही है।

गुरु का पूजन भाव से करना चाहिए, और हमें अपने समर्पण और अपने कार्य का अनुपात ऐसा रखना होगा जिससे हमारा कार्य राष्ट्र को परम वैभव तक पहुंच सके। यह कार्य कुछ लोगों के करने से संभव नहीं होगा, इसके लिए हम

सबको मिलकर प्रयास करना होगा। हमें इसके लिए क्या करना पड़ेगा, इस पर विचार करना होगा।

वर्ष में एक बार होने वाला गुरु पूजन

हम वर्ष भर स्वयं को संघ का स्वयंसेवक कहते हैं। समाज में संघ की बात करते हैं, गणवेश पहनते हैं, शाखा जाते हैं, और दूसरों को भी संघ से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। हम देशभक्ति के गीत गाते हैं, प्रेरणादायक कथाएं साझा करते हैं, और गर्व से बताते हैं कि हमने संघ शिक्षण वर्ग किया है। हम इस परम पवित्र भगवा ध्वज को अपना गुरु मानते हैं, जो त्याग और समर्पण का प्रतीक है। लेकिन क्या हमने वर्ष भर में एक बार आने वाले इस महत्वपूर्ण उत्सव, गुरु पूजन और गुरु दक्षिणा कार्यक्रम में अपना समर्पण किया? यदि नहीं, तो हमारे स्वयंसेवक होने का अर्थ क्या है? जब हमने अपने गुरु की पूजा ही नहीं की, गुरु को अपना समर्पण ही नहीं दिया। समर्पण का भाव केवल जिस दिन दक्षिणा करनी है उस दिन के लिए नहीं रहता, अपितु उसके लिए तो वर्ष भर चिन्तन चलता है। अनेक कार्यकर्ता वर्ष भर संग्रह करते हैं और उसी के कारण उनके मन में अधिकाधिक त्याग वृत्ति का विकास होता है।

समर्पण का अर्थ केवल धन नहीं है, हम अपने गुरु को समय और मन भी समर्पित कर सकते हैं। किंतु, एक स्वयंसेवक का गुरु पूजन में भाग लेना अत्यंत आवश्यक है। दायित्ववान कार्यकर्ताओं और सक्रिय स्वयंसेवकों का, और पुराने कार्यकर्ताओं का भी यह कर्तव्य बनता है। सोचिए, यदि हम दायित्ववान स्वयंसेवक होकर भी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के फोन का इंतजार करते रहें कि वे हमें शाखा या आसपास की शाखाओं में गुरु पूजन आयोजित करने के लिए कहें, तो क्या होगा? हो सकता है कि वे व्यस्त हों या हमसे संपर्क न हो पाए। क्या हम स्वयं इस गुरु पूजन उत्सव के आयोजन में सहयोग नहीं कर सकते? जिस बस्ती, मंडल, गांव, ब्लॉक या नगर में हम रहते हैं, वहां ऐसे स्वयंसेवक भी तो हैं जो प्रतिदिन शाखा नहीं आते। उनका गुरु पूजन कौन करवाएगा? यह दायित्व हमारा ही तो है कि हम ऐसे स्वयंसेवकों को सूचित करें और उन्हें शाखाओं पर गुरु पूजन के लिए प्रेरित करें। यदि ऐसे स्वयंसेवकों का गुरु पूजन नहीं हो पाता, तो हम भी इसके लिए उत्तरदायी हैं। अपनी शाखा की वृहत सूची के आधार पर इसका बंटवारा गटनायकों में करना और उन्हें विचार देने के लिए सम्पर्क करना पड़ेगा।

कार्यक्रम के दिन प्रत्येक का जागरण और कार्यक्रम तक सबको लाने की व्यवस्था करना भी आवश्यक है। हमें अपने गुरु की पूजा नित्य करनी चाहिए और उसके गुणों को अपने में समाहित करना चाहिए। महर्षि वेदव्यास जी का राष्ट्र के लिए महान योगदान है। संसार के संसाधनों पर मनुष्य का उतना ही अधिकार है जितना अपने भरण-पोषण के लिए अत्यंत आवश्यक है, शेष समाज कार्य के लिए ही है। क्या किसी भी संगठन के लिए आर्थिक आधार आवश्यक है? अवश्य ही।

वर्ष भर में होने वाला गुरु दक्षिणा कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वार्षिक कार्यों का आधार है। स्वयंसेवकों द्वारा वर्ष में एक बार गुरुदक्षिणा में समर्पित राशि मुख्य रूप से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में चलाए जा रहे सेवा कार्यों पर व्यय होती है, जिसमें गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए विद्यालय और छात्रावास चलाना, स्वास्थ्य के क्षेत्र में चिकित्सा शिविर आयोजित करना और रोगियों की सहायता करना, आपदा राहत के समय पीड़ितों को भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान करना, तथा सामाजिक उत्थान के लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाना शामिल है। इस समर्पण राशि का एक छोटा अंश संगठन के कार्यालयीन व्यय के लिए उपयोग किया जाता है। हमें अपने समर्पण और अपने कार्य का अनुपात कैसा रखना होगा ताकि हमारा कार्य राष्ट्र को परम वैभव तक पहुंचा सके। क्या इस कार्य को कुछ लोग कर कर पायेंगे? इसके लिए सब लगे, हमें क्या करना पड़ेगा? वर्ष भर में होने वाली गुरु दक्षिणा कार्यक्रम से ही पूरे वर्ष का कार्यालय व संघ कार्य का खर्चा चलता है।

जिस किसी व्यक्ति ने भी संघ की शाखा में या किसी कार्यक्रम में एक बार भी ध्वज प्रणाम कर लिया वह व्यक्ति आजीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक बन जाता है और ऐसे सभी स्वयंसेवकों का गुरुपूजन अवश्य होना चाहिए।

प्यारे स्वयंसेवक बंधुओ, आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने जीवन में इन मूल्यों को सर्वोपरि रखेंगे और एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो संस्कारवान हो, शिक्षित हो, जहां स्वस्थ विमर्श हो और जहां सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य की भावना प्रबल हो। हम गुरु दक्षिणा के माध्यम से अपने इस संकल्प को और मजबूत करें और राष्ट्र सेवा के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते रहें। भारत माता की जय! ❐

दिल्ली में आयोजित हुआ आपदा प्रबंधन वर्ग

■ डॉ. संजय जिंदल और कौशल कुमार

गत 26 और 27 जुलाई को कन्वेंशन सेंटर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में आपदा प्रबंधन वर्ग आयोजित हुआ। अतिथियों ने भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उद्घाटन सत्र में सेवा भारती, दिल्ली के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि जनकल्याण समिति का परिष्कृत रूप आज राष्ट्रीय सेवा भारती है। ले.ज. सैयद अता हसनैन जी (अवकाशप्राप्त), सदस्य, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 26वीं कारगिल विजय दिवस की बधाई देते हुए कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया। उन्होंने बताया कि दिसम्बर, 1970 में बांग्लादेश में भयंकर चक्रवात के कारण 5,40,000 लोग मारे गये और वहाँ से बड़ी संख्या में लोग भारत के त्रिपुरा, मिजोरम, पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों में पलायन कर गये। सोमालिया में प्राकृतिक आपदा के कारण लोग समुद्री डाकू बन गये। अफ्रीका में भी ऐसा ही हुआ। पाकिस्तान में 2022-23 में बाढ़ से अनेक लोगों का पलायन हुआ। भारत में 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम पारित हुआ। 2016 में आपदा के 10 बिंदुओं पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा ध्यान केंद्रित किया गया। आपदा प्रबंधन का कार्य गृह मंत्रालय की देखरेख में होता है। संपूर्ण भारतवर्ष में 750 जिले हैं। इनमें से आपदा प्रभावित 145 जिलों पर अध्ययन किया जा रहा है। भारत में सात पावर प्रोजेक्ट हैं, आठवां बन रहा है। भारत पर न्यूक्लियर खतरा बढ़ रहा है, मानव-निर्मित रासायनिक, जैविक वायरस जैसी आपदा का खतरा बढ़ रहा है। भारत में प्रतिवर्ष 38,000 मौतें पानी में डूबने से हो रही है। इसके लिए जन जागरूकता बढ़ानी होगी, अपने संसाधन बढ़ाने होंगे। आपदा प्रबंधन से संबंधित मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक बैठक करनी चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संजीव जिंदल जी, अतिरिक्त सचिव गृह विभाग (आपदा प्रबंधन) ने मार्गदर्शन करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन आपदा का सबसे बड़ा कारण है। जान-माल का शून्य नुकसान का लक्ष्य रखना है। एन.डी.आर.एफ., एस.डी.आर.एफ. डी.डी.आर.एफ. जैसे संस्थानों के साथ कार्य को बढ़ाना है। आपदा प्रबंधन को जन-आन्दोलन बनाना है। SACHET app के माध्यम से क्षेत्र में आने वाली आपदाओं की सूचना प्राप्त होती है। इसके सहयोग से हानि को कम किया जा सकता है। प्रतिवर्ष दो हजार से अधिक लोग वज्रपात होने से मारे जा रहे हैं। DAMINI app के सहयोग के

माध्यम से इस आपदा से बचाव किया जा सकता है।

इस आपदा प्रबंधन वर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे लोग मास्टर ट्रेनर होंगे। भवन निर्माण नियमों के अनुकूल होने चाहिए, भूकंप-रोधी होने चाहिए। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में 300 से अधिक संगठन आपदा प्रबंधन के लिए जुड़े हैं। यू.जी.सी. में आपदा प्रबंधन के पाठ्यक्रम लागू किए जा रहे हैं। अध्यक्षीय भाषण में श्रीकेश जी ने राष्ट्रीय सेवा भारती को धन्यवाद दिया कि इस संगठन के द्वारा आपदा प्रबंधन पर इतना अच्छा कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं की सुरक्षा के लिए 'सेफ्टी किट' की मांग रखी। श्री सुधीर कुमार जी, अखिल भारतीय संगठन मंत्री (राष्ट्रीय सेवा भारती) ने मार्गदर्शन देते हुए बताया कि 2004 में आई भयंकर सुनामी के बाद 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम लागू किया गया। कौटिल्य अर्थशास्त्र में आठ प्रकार की आपदा और आपदा प्रबंधन पर

दिल्ली प्रांत में आपदा प्रबंधन हेतु शामिल किए जाने वाले प्रमुख क्षेत्र

स्वाथ्य और शिक्षाः
- अस्पताल
- विद्यालय
- छात्रावास और पीजी आवास
- वृद्धाश्रम और पुनर्वास केंद्र

वाणिज्यिक और आवासीय इमारतें
- ऊँची ऑफिस इमारतें (हाई-राइज़ ऑफिस)
- ऊँची आवासीय इमारतें (हाई-राइज़ रेजिडेंशियल)
- खरीदारी बाजार (शॉपिंग मार्केट्स)
- सिनेमा हॉल और मल्टीप्लेक्स
- होटल्स
- मॉल और सार्वजनिक स्थान

धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल
- पूजा स्थल (मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि)
- अस्थायी धार्मिक आयोजन स्थल

सामुदायिक और नागरिक क्षेत्र
- आरडब्ल्यूए – रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन
- झुग्गी बस्तियाँ (स्लम एरिया)
- सार्वजनिक पार्क और सामुदायिक मैदान

बड़े आयोजन स्थल
- स्टेडियम
- ऑडिटोरियम और बड़े हॉल

परिवहन और यातायात स्थल
- हवाई अड्डे (एयरपोर्ट्स)
- बस स्टैंड और ट्रांसपोर्ट टर्मिनल
- हाईवे टोल प्लाज़ा

उच्च जोखिम वाले संचालन क्षेत्र
- पेट्रोल पंप और एलपीजी स्टेशन
- कारखाने और औद्योगिक इकाइयाँ
- कोल्ड स्टोरेज और गोदाम
- निर्माण स्थल (कंस्ट्रक्शन साइट्स)

सरकारी और संस्थागत क्षेत्र
- जेल / सुधारगृह
- युद्धकाल से पहले, दौरान और बाद में आपदा प्रबंधन

व्यापक रूप से लिखा गया है। आपदा आ जाने पर राजा की भूमिका, राज्य की तैयारी पर बताया गया है। हम मानव को प्रकृति से तालमेल बैठाकर चलना है। विश्व में सबसे अधिक आपदा से प्रभावित होने वाला देश जापान आपदा प्रबंधन पर अच्छा कार्य कर रहा है। आपदा से पूर्व तैयारी रखना चाहिए। आपदा के समय जनता का धैर्य रखना अति आवश्यक है। विद्यालयों में कक्षा 6 से पाठ्यक्रम लागू करना चाहिए। जिस प्रकार से कक्षाओं में कैप्टन बनाए जाते हैं, उसी प्रकार से आपदा प्रबंधन कैप्टन बनाकर बच्चों को प्रेरित और दक्ष बनाना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन श्री संजय जिंदल जी द्वारा किया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री दीपनारायण जी द्वारा सुमधुर और भावपूर्ण शैली में संचालित हुआ।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा भारती के संयुक्त महामंत्री श्री विजय पुराणिक जी, विशिष्ट आपदा केंद्र के सहायक शिक्षक डॉक्टर दीपनारायण पाण्डेय जी, श्री राम कुमार जी, महामंत्री, राष्ट्रीय सेवा भारती, श्री विकास नाम जोशी जी, कार्यकारी अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा भारती, श्री अनिल माहेश्वरी जी, श्री कृष्ण कुमार जी, राष्ट्रीय सेवा भारती के कार्यकर्ता, सेवा भारती दिल्ली प्रांत के कार्यकर्ताओं सहित 38 प्रांतों के 71 सदस्य और 9 विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

बता दें कि राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा नियमित रूप से आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया गया है। इस प्रकार के अभी तक तीन प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किये जा चुके हैं। पहला मुंबई, दूसरा भुवनेश्वर और तीसरा प्रशिक्षण वर्ग गाजियाबाद में आयोजित किया जा चुका है और इसी श्रृंखला में यह चौथा वर्ग दिल्ली में लगाया गया।

प्रशिक्षण वर्ग के प्रमुख बिंदु जैसे आपदा की सामाजिक अवधारणा और स्थानीय संवेदनशीलता की पहचान करना, मानवीय व्यवहार, तनाव और सदमा प्रबंधन, दंगे, भगदड़ और आकस्मिक आपदाओं के समय सुरक्षा उपाय करना, आपदा प्रबंधन टोली का गठन और नेतृत्व प्रशिक्षण, व्यावहारिक अभ्यास और आपदा स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया रहे।

समापन सत्र में आदरणीय श्री विजय पुराणिक जी ने कहा कि हमें समाज में परिवर्तन लाने का हिस्सा बनना है। कार्यकर्ता के चाल-चलन से ही कार्यकर्ता का निर्माण होता है। समाज को साथ लेकर चलना है। हमें समाज में आपदा प्रबंधन का स्थाई ढांचा खड़ा करना है। उन्होंने बताया कि किसी भी कार्य को करने के लिए एक टोली की जरूरत होती है जिससे एक समय में कई जगह कार्य किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष प्रान्त और जिला स्तर पर प्रशिक्षण वर्ग लगाए जायेंगे। उन्होंने बताया कि आपदा प्रशिक्षण स्कूल, कॉलेजों जैसी जगह किये जाये जिससे शुरू से ही आपदा से निपटने का ज्ञान हो और समय आने पर सब लोग अपनी भूमिका निभाएं। हमारी भूमिका समाज को जागृत करना और समाज को एकजुट करना है। जब समाज जागृत होगा तो उसी तरह व्यवस्था करेगा और तब हम सफल होंगे और अगर समाज जागृत नहीं होगा तो समझो हमने कुछ नहीं किया। हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जहां भोजन और दवाइयाँ न बॉटनी पड़े। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य समाज में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता, आत्मनिर्भरता व नेतृत्व निर्माण को प्रोत्साहित करना है। ❒

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की पुण्यतिथि

संस्कृति के संरक्षक

■ शारदा भसीन

राष्ट्रगान रचयिता गुरुदेव रवींद्रनाथ नाथ ठाकुर महान गीतकार, नाटककार, संगीतकार, चित्रकार, दार्शनिक समाज-सुधारक और कवि थे। इन्होंने अपनी लेखनी से पश्चिमी देशों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया। उन्होंने अपनी रचनाओं से न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अमिट छाप छोड़ दी। आप वर्ष 1913 में महाकाव्य 'गीतांजलि' के लिए साहित्य के नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले यूरोपीय और एशियाई व्यक्ति थे। उनका जन्म 7 मई 1861 में कोलकाता के ब्राह्मण परिवार में हुआ। 13 भाई - बहनों में सबसे छोटे थे। केवल 8 साल की उम्र में ही पहली कविता लिख डाली। उनका पहला कविता संग्रह 16 साल की उम्र में ही प्रकाशित हो गया। उनकी सुप्रसिद्ध रचना 'एकला चलो रे!' ने संपूर्ण भारतवासियों के मन में नवीन चेतना, ऊर्जा, उत्साह और दृढ़ संकल्प की चेतना कूट-कूट कर भर दी।

चलो अकेले रे!
गर पुकार सुन कोई न आए।
तब भी चलो अकेले रे
चलो अकेले! चलो अकेले!
चलो अकेले! चलो अकेले रे!
गर कोई भी करे न बातें
सुन तो अरे ओ अभागे
गर सब तुमसे मुख फेरें
हों कायर भय जागे
लगा प्राण की बड़ी अब तू
मुखर बनो अपनी मन कथा
कहो अकेले रे
यदि सारे फिर जाएं तुमसे
सुन तो अरे अभागे
जाते समय सघन पथ तुझको
कोई न मुड़के देखे
तब पथ के काँटों को अपने
रक्त सने चरणों के नीचे
चलो अकेले रे
गर ना हो आलोक कहीं भी
सुनो ओ अरे अभागे
यदि अंधियारी रातों में
झंझावात का यम जागे
दरवाजे हों बंद,
जले वज्रानल तब तुम
अपना सीना- पंजर बालो
जलो अकेले!

7 अगस्त 1941 को आपने अंतिम साँस ली और आत्मा परमात्मा में लीन हो गई। भारत आपका सदैव ऋणी रहेगा। इस वर्ष आपकी 84वीं पुण्यतिथि मनाई जा रही है। ❐

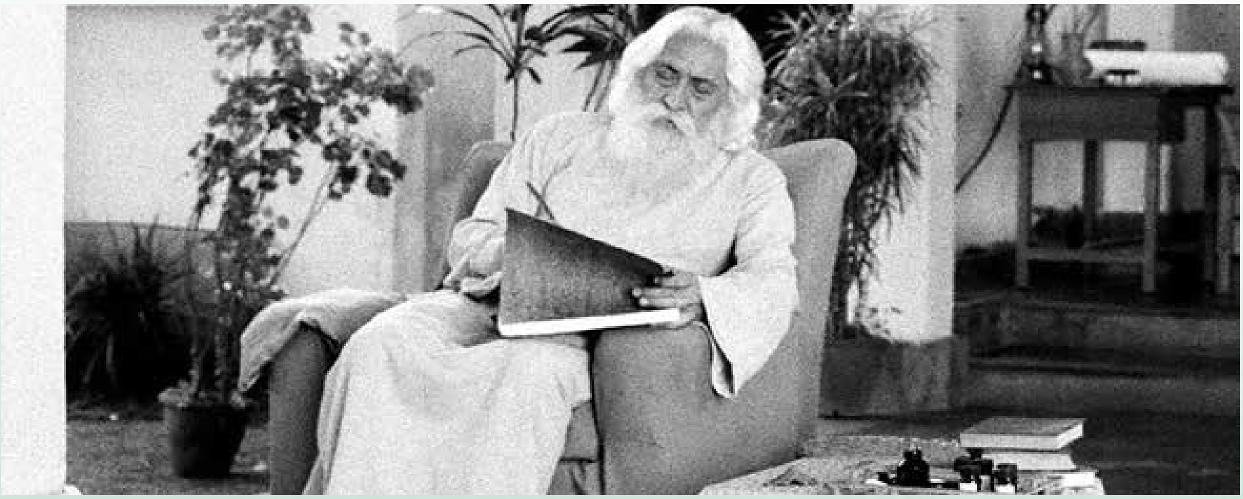

किचन गार्डन : एक स्वस्थ और सुंदर विकल्प

■ अमिता गुप्ता

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में, हमारे पास अपने स्वास्थ्य और सुंदरता का ध्यान रखने का समय नहीं होता है। लेकिन, घर में किचन गार्डन बनाना एक ऐसा तरीका है जिससे हम अपने स्वास्थ्य और सुंदरता दोनों का ध्यान रख सकते हैं। घर का हरा भरा सुंदर स्थान न केवल हमारे घर की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। एक हरा भरा स्थान हमें प्रकृति के करीब ले जाता है और हमें तनाव से मुक्ति दिलाता है।

पौधों का चयन करते समय हमें उनकी देखभाल की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखना होता है। कुछ पौधे अधिक पानी की आवश्यकता वाले होते हैं, जबकि कुछ पौधे कम पानी में भी जीवित रह सकते हैं। हमें अपने पौधों की नियमित देखभाल करनी होती है, जैसे कि पानी देना, खाद देना, और उनकी पत्तियों को साफ करना।

घर में हरा भरा स्थान बनाने से हमें कई फायदे होते हैं। यह हमारे घर की हवा को शुद्ध करता है, और हमें ऑक्सीजन प्रदान करता है। यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होता है, क्योंकि यह हमें तनाव से मुक्ति दिलाता है और हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

इसके अलावा, घर में हरा भरा स्थान हमें अपने परिवार और मित्रों के साथ समय बिताने का अवसर प्रदान करता है। हम अपने पौधों के साथ समय बिता सकते हैं, और उनकी देखभाल कर सकते हैं। यह हमारे परिवार के बंधनों को मजबूत करता है, और हमें एक दूसरे के क़रीब लाता है सबसे पहले, हमें ताजे और स्वस्थ फल और सब्जियां मिलती हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होती हैं। इसके अलावा, किचन गार्डन बनाने से हमारे घर की सुंदरता भी बढ़ती है और हमें एक प्राकृतिक और शांत वातावरण मिलता है।

किचन गार्डन में लगाने के लिए उपयुक्त पौधे

किचन गार्डन में लगाने के लिए कई तरह के पौधे उपयुक्त होते हैं। इनमें शामिल हैं:

- फूलदार पौधे जैसे कि गेंदा, गुलाब, सदाबहार, अपराजिता, गुड़हल, हरसिंगार, मोगरा।
- सब्जियां जैसे कि भिंडी, लौकी और कद्दू, टमाटर, मिर्च, बैंगन, सहजन, आंवला, नींबू, करेला, पालक।
- हर्ब्स और औषधीय पौधे जैसे कि तुलसी, पुदीना,करी पत्ता, पान, हल्दी, लेमन टी, एलोवेरा, लहसुन, धनिया,मेथी, सौंफ।

मौसम के अनुसार पौधों का चयन आवश्यक है बरसात शुरू हो गई है कटिंग से भी पौधे तैयार कर सकते हैं।

कटिंग लगाने के लिए मिट्टी तैयार करें उसमें 50% रेत 50% मिट्टी मिलायें। फिफ्टी परसेंट रीत और फिफ्टी परसेंट सॉयल गार्डन्स आए मिला लें।

उसमें ब्राउन कलर की टहनियां काटकर 6 -8 इंच लंबी टहनी बना लें और उनकी पत्तियां हटा दें उन्हें 2 -3 इन्च इस मिट्टी में लगा दें थोड़े दिन में15-35 दिन में नई जड़ें आ जाएंगी।

कटिंग से लगने वाले पौधे

सिंगोनियम, अपराजिता, गुड़हल स्नेक प्लांट और सदाबाहर कोलियस रियो लालसा टर्टल वाइन बोगनबेलिया चम्पा चमेली पारिजात गुलदाऊदी स्पाइडर प्लांट कनेर गेंदा मधुमालती कलेंचों बेबी सन रोज़ रेन लिली अलमांडा कनेर गुलाब टिकेगा, जीनिया।

घर में किचन गार्डन बनाना एक स्वस्थ और सुंदर विकल्प है। इससे हमें ताजे और स्वस्थ फल और सब्जियां मिलती हैं और हमारे घर की सुंदरता भी बढ़ती है। अगर आप भी अपने घर में किचन गार्डन बनाना चाहते हैं, तो ऊपर दिए गए सुझावों का पालन करें और अपने घर को एक स्वस्थ और सुंदर स्थान बनाएं। ❐

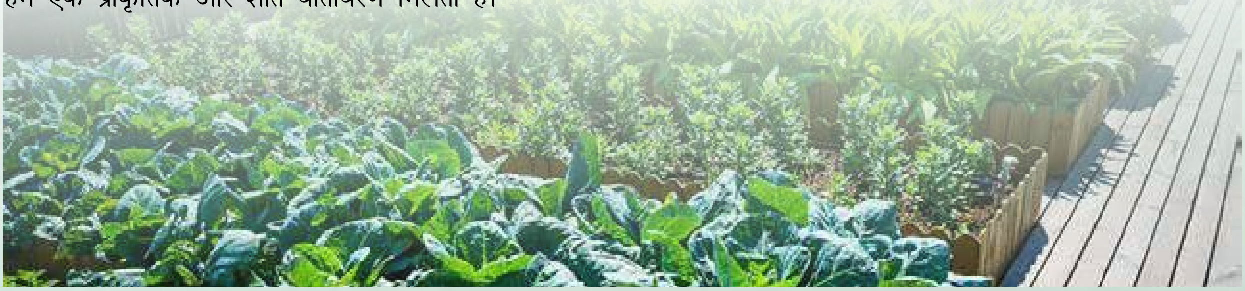

कैसे शुरू हुई कांवड़ यात्रा

■ विनोद श्रीवास्तव

अभी कुछ ही दिन पहले कांवड़ यात्रा संपन्न हुई है। पिछले दो दशक से इस यात्रा की लोकप्रियता बढ़ी है और अब समाज का उच्च एवं शिक्षित वर्ग भी कांवड़ यात्रा में शामिल होने लगा है। लेकिन क्या आप जानते हैं इस यात्रा का इतिहास? कौन थे सबसे पहले कांवड़िया? इसे लेकर अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग मान्यता है, तो आइए आज हम इसके बारे में आपको विस्तार से बताते हैं:

परशुराम थे पहले कांवड़िया!?

कुछ विद्वानों का मानना है कि सबसे पहले भगवान परशुराम ने उत्तर प्रदेश के बागपत के पास स्थित 'पुरा महादेव' का कांवड़ से गंगाजल लाकर जलाभिषेक किया था। परशुराम इस प्रचीन शिवलिंग का जलाभिषेक करने के लिए गढ़मुक्तेश्वर से गंगा जी का जल लाए थे। आज भी इस परंपरा का पालन करते हुए सावन के महीने में गढ़मुक्तेश्वर से जल लाकर लाखों लोग 'पुरा महादेव' का जलाभिषेक करते हैं। गढ़मुक्तेश्वर का वर्तमान नाम ब्रजघाट है।

श्रवण कुमार थे पहले कांवड़िया!?

वहीं कुछ विद्वानों का कहना है कि सबसे पहले त्रेतायुग में श्रवण कुमार ने पहली बार कांवड़ यात्रा की थी। माता-पिता को तीर्थ यात्रा कराने के दौरान श्रवण कुमार हिमाचल के ऊना क्षेत्र में थे जहां उनके अंधे माता-पिता ने उनसे मायापुरी यानि हरिद्वार में गंगा स्नान करने की इच्छा प्रकट की। माता-पिता की इस इच्छा को पूरी करने के लिए श्रवण कुमार अपने माता-पिता को कांवड़ में बैठा कर हरिद्वार लाए और उन्हें गंगा स्नान कराया। वापसी में वे अपने साथ गंगाजल भी ले गए। इसे ही कांवड़ यात्रा की शुरुआत माना जाता है।

भगवान राम ने की थी कांवड़ यात्रा की शुरुआत!?

कुछ मान्यताओं के अनुसार भगवान राम पहले कांवड़िया थे। उन्होंने बिहार के सुल्तानगंज से कांवड़ में गंगाजल भरकर बाबाधाम जो देवघर के नाम से भी जाना जाता है वहां शिवलिंग का जलाभिषेक किया था।

रावण ने की थी इस परंपरा की शुरुआत!?

पुराणों के अनुसार कांवड़ यात्रा की परंपरा समुद्र मंथन से जुड़ी है। समुद्र मंथन से निकले विष को पी लेने के कारण भगवान शिव का कंठ नीला हो गया और वे नीलकंठ कहलाए। लेकिन विष के नकारात्मक प्रभावों ने शिव को घेर लिया। शिव को विष के नकारात्मक प्रभावों से मुक्त कराने के लिए उनके अनन्य भक्त रावण ने ध्यान किया। उसके बाद कांवड़ में जल भरकर रावण ने 'पुरा महादेव' स्थित शिवमंदिर में शिवजी का जलाभिषेक किया। इससे शिवजी विष के नकारात्मक प्रभावों से मुक्त हुए और यहीं से कांवड़ यात्रा की परंपरा की शुरुआत हुई।

देवताओं ने सर्वप्रथम शिव का किया था जलाभिषेक!?

कुछ मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन से निकले हलाहल के प्रभावों को दूर करने के लिए देवताओं ने शिव पर पवित्र नदियों का शीतल जल चढ़ाया था। सभी देवता शिवजी पर गंगाजी से जल लाकर अर्पित करने लगे। सावन मास में कांवड़ यात्रा का प्रारंभ यहीं से हुई। ❐

बच्चों में नैतिक सोच को कैसे बढ़ाया जाए

■ अनंत कुमार

हम बच्चों पर अपनी सोच लंबे समय तक थोप नही सकते। अगर आप सही-गलत की उनकी सोच को नैतिक आधार देना चाहते हैं, तो उनसे बात करते रहें। बच्चों में दया, करुणा और ईमानदारी जैसी भावनाएं एक दिन में पैदा नहीं होतीं। अच्छे काम के लिए पुरस्कार और बुरे के लिए सजा का एक तरीका भी अपनाया जाता रहा है। लेकिन, बच्चे स्वयं नैतिक स्तर पर सोच सकें, इसके लिए भावनात्मक, तर्क और सामाजिक कई पहलुओं पर काम करना पड़ता है। साइकोलॉजी टुडे में टिमोथी कुक अपने स्तंभ में चार तरीकों से बच्चों में नैतिक सोच को बढ़ावा देने की बात करते हैं, जो कि इस प्रकार है -

1. प्रश्न पूछने की छूट दीजिए

अगर बच्चे पूछते हैं, यह नियम क्यों सही है? या हमें ऐसा ही क्यों करना चाहिए? तो यह न कहें हम कह रहे हैं या ऐसा ही होता है। उनके प्रश्न का जवाब पूरी उत्सुकता के साथ दें। उस नियम के पीछे की भावना समझाएं, ताकि वे समझ सकें कि उस नियम को मानने से क्या हासिल होता है। नैतिक रूप से क्या सही-गलत है और सामान्य नियम क्या कहते हैं, इस संबंध में भी उन्हें समझाएं। कई बार कानूनन आप गलत नहीं होते, पर नैतिक स्तर पर वह काम गलत हो सकता है।

2. नजरिया बढ़ाने वाले कामों से जोड़ें

बच्चों को यह समझाने में मदद करें कि उनके काम कैसे दूसरों पर असर डालते है? जब कोई मतभेद हो तो उनसे पूछें, तुम क्या सोचते हो कि दूसरे व्यक्ति को कैसा लगेगा? तुम क्या करते, अगर तुम उस जगह होते? इससे बच्चों में हमदर्दी की भावना बढ़ती है, जो नैतिक सोच विकसित करने के लिए आधार का काम करती है । अगर बच्चे दूसरों के नजरिये को समझ पाते हैं, तो वे चुनौतीपूर्ण हालात में बेहतर निर्णय ले पाते हैं।

3. नैतिक द्वंद्वों पर बात करें

कुछ बातों का एक सही जवाब नहीं होता। बच्चों के सामने इस तरह के सवालों पर बात करें। मसलन, दूसरे बच्चे तुम्हारे दोस्त के पीछे क्या कहते हैं, क्या तुम्हें उसे बताना चाहिए? या फिर दूसरों को बुरा न लगे इसके लिए क्या झूठ बोलना सही है? अगर कोई बच्चा नकल कर रहा है, तो तुम क्या करोगे जैसी स्थितियों पर उनसे बात करते रहें। इस तरह जब उनका ऐसी स्थिति से सामना होगा तो वे बेहतर फैसले ले पाएंगे।

4. अपना आदर्श प्रस्तुत करें

अपने उदाहरण से बच्चों को बताएं कि आप नैतिक स्तर पर क्या सोचते हैं। जब आप क्या करें या न करें के द्वंद्व में फंसते हैं, तो किस ढंग से सोचते हैं। मसलन, ईमानदारी और करुणा के बीच फंसने पर आप किस ढंग से फैसला लेंगे? ❒

(हिन्दुस्तान से साभार)

कुछ घरेलू नुस्खे

अगर आप कुछ खाने पीने की चीज़ों में सुधार करते हो तो अपने शरीर को स्वस्थ बनाने में मदद हो सकती है। आप अपने डॉक्टर खुद बन सकते हैं।

1. नमक केवल सेन्धा प्रयोग करें। थायराइड, बीण्पीण, पेट ठीक होगा।
2. कुकर स्टील का ही काम में लें। एल्युमिनियम में मिले समंक से होने वाले नुकसानों से बचेंगे
3. रिफाइंड न खाकर केवल तिल, सरसों, मूंगफली, नारियल का तेल प्रयोग करें। रिफाइंड में बहुत केमिकल होते हैं जो शरीर में कई तरह की बीमारियाँ पैदा करते हैं।
4. सोयाबीन बड़ी को 2 घण्टे भिगो कर, मसल कर ज़हरीली झाग निकल कर ही प्रयोग करें।
5. देसी गाय के घी का प्रयोग बढ़ाएं। अनेक रोग दूर होंगे, वजन नहीं बढ़ता।
6. ज्यादा से ज्यादा मीठा नीमधकढ़ी पत्ता खाने की चीजों में डालें, सभी का स्वास्थ्य ठीक करेगा।
7. ज्यादा चीजें लोहे की कढ़ाई में ही बनाएं। आयरन की कमी किसी को नहीं होगी।
8. भोजन का समय निश्चित करें, पेट ठीक रहेगा। भोजन के बीच बात न करें, भोजन ज्यादा पोषण देगा।
9. नाश्ते में अंकुरित अन्न शामिल करें। पोषक विटामिन, फाइबर मिलेंगें।
10. सुबह के खाने के साथ देशी गाय के दूध का बना ताजा दही लें, पेट ठीक रहेगा।
11. चीनी कम से कम प्रयोग करें, ज्यादा उम्र में हड्डियां ठीक रहेंगी।
12. चीनी की जगह बिना मसले का गुड़ या देशी शक्कर लें।
13. रसोई में घुसते ही नाक में घी या सरसों तेल लगाएं, सर और फेफड़े स्वस्थ रहेंगे।
14. करेले, मैथी, मूली याने कड़वी सब्जियां भी खाएँ, रक्त शुद्ध रहेगा।
15. पानी मटके वाले से ज्यादा ठंडा न पिएं, पाचन व दांत ठीक रहेंगे।
16. प्लास्टिक, एल्युमिनियम रसोई से हटाएं, केन्सर कारक हैं।
17. माइक्रोवेव ओवन का प्रयोग केन्सर कारक है।
18. ठंडी चीजें कम से कम खाएँ, पेट और दांत को खराब करती हैं।
19. बाहर का खाना बहुत हानिकारक है, खाने से सम्बंधित ग्रुप से जुड़कर सब घर पर ही बनाएं।
20. तली चीजें छोड़ें, वजन, पेट, एसिडिटी ठीक रहेगी।
21. हमेशा नहा कर ही किचिन मे प्रवेश करें।
22. अदरक, अजवायन का प्रयोग बढ़ाएं, गैस और शरीर के दर्द कम होंगे।

23. रात को आधा चम्मच त्रिफला एक कप पानी में डाल कर रखें, सुबह कपड़े से छान कर इस जल से आंखें धोएं, चश्मा उतर जाएगा। छान कर जो पाउडर बचे उसे फिर एक गिलास पानी में डाल कर रख दें। रात को पी जाएं। पेट साफ होगा, कोई रोग एक साल में नहीं रहेगा।
24. सुबह रसोई में चप्पल न पहनें, शुद्धता भी, एक्यू प्रेशर भी।
25. रात का भिगोया आधा चम्मच कच्चा जीरा सुबह खाली पेट चबा कर वही पानी पिएं, एसिडिटी खतम।
26. एक्यूप्रेशर वाले पिरामिड प्लेटफार्म पर खड़े होकर खाना बनाने की आदत बना लें तो भी सब बीमारी शरीर से निकल जायेगी।
27. चौथाई चम्मच दालचीनी का कुल उपयोग दिन भर में किसी भी रूप में करने पर निरोगता अवश्य होगी।
28. सर्दी में बाहर जाते समय 2 चुटकी अजवायन मुँह में रखकर निकलिए, सर्दी से नुकसान नहीं होगाए
29. रस निकले नीबू के चौथाई टुकड़े में जरा सी हल्दी, नमक, फिटकरी रख कर दांत मलने से दांतों का कोई भी रोग नहीं रहेगा
30. कभी-कभी नमक-हल्दी में 2 बून्द सरसों का तेल डाल कर दांतों को उंगली से साफ करें, दांतों का कोई रोग टिक नहीं सकता।
31. बुखार में 1 लीटर पानी उबाल कर 250 मिली लीटर कर लें, साधारण ताप पर आ जाने पर रोगी को थोड़ा थोड़ा दें, दवा का काम करेगा। ❒

मालती मुर्मू की प्रेरक शिक्षा

■ द्वारा रंजना शर्मा

जब दिल में अरमान लिया,
मंजिल को अपना मान लिया,
तो मुश्किल क्या, आसान क्या,
बस! ठान लिया तो ठान लिया।।

यही पंक्तियाँ बिल्कुल सटीक बैठती हैं पश्चिम बंगाल के एक छोटे से कस्बे में रहने वाली मालती मुर्मू जी पर। मालती न कोई बड़ी नेता हैं, न ही किसी बड़े एनजीओ से जुड़ी हैं। वह एक साधारण आदिवासी महिला हैं, लेकिन उनके विचार असाधारण हैं। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले की अयोध्या पहाड़ियों के बीच बसा जिलिंगसेरेंग गांव... एक सामान्य आदिवासी गांव, जहां साल 2020 में जब मालती शादी के बाद आई, तो उन्होंने देखा कि बच्चे स्कूल दूर होने के कारण पढ़ने नहीं जाते। मालती ने खुद सिर्फ आठवीं तक पढ़ाई की थी, लेकिन उन्होंने ठान लिया कि जितना आता है, उतना जरूर सिखाऊंगी। एक पेड़, एक ब्लैकबोर्ड और कुछ पुरानी किताबों के साथ ढेर सारा जज्बा, हर बच्चे को पढ़ाने का। इस अभियान में मालती को सबसे बड़ा साथ मिला उनके पति बांका मुर्मू जी का, जो खुद एक दिहाड़ी मजदूर हैं। घर में दो छोटे बच्चे हैं, सीमित संसाधन हैं, लेकिन उन्होंने कभी मालती को रोका नहीं। मालती बच्चों को उनकी मातृभाषा संथाली, राज्य की भाषा बंगाली, और अंग्रेजी तीनों में शिक्षा देती हैं। वे न सिर्फ अक्षर ज्ञान देती हैं, बल्कि बच्चों में आत्मविश्वास भरती हैं, और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

आज मालती 45 बच्चों को पढ़ा रही हैं। गांव के लोग अब अपनी सोच बदल रहे हैं। माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ने भेजने लगे हैं। गांव में शिक्षा की नई लहर चल पड़ी है।

सच में, मालती मुर्मू की कहानी हम सबको यह सिखाती है कि बदलाव लाने के लिए बहुत बड़े संसाधनों की नहीं, बल्कि एक बड़े दिल और मजबूत इरादों की ज़रूरत होती है। उनका जीवन एक प्रेरणा है कि अगर ठान लो, तो असंभव कुछ नहीं। ❒

(यह लेख गूगल पर उपलब्ध विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार किया गया है।)

सेवा भारती के कारण मैं आज इस ऊँचाई पर हूँ

मैं सौरभ, बिहार के नालंदा जिला का रहने वाला हूँ। मैंने 2012 में प्रवेश परीक्षा पास कर दिल्ली में स्थित सेवा भारती द्वारा संचालित सेवाधाम विद्या मंदिर में 6 जी कक्षा में प्रवेश लिया। इतनी कम उम्र में माता पिता से दूर रहना बहुत मुश्किल था, परन्तु सेवाधाम में जब मैं आया तो मुझे कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं हुई। सेवाधाम में गुरुजी और माता जी ने कभी भी माता और पिता की कमी नहीं खलने दी और मुझे हमेशा उनसे प्यार व स्नेह प्राप्त हुआ। यहाँ मुझे मेरे कक्षा के सहपाठियों के द्वारा भी भरपूर सहयोग व प्यार मिला तथा बड़े भैयाओं का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सेवा भारती के द्वारा समय-समय पर विद्यालय में कई कार्यक्रम करवाए जाते थे जिनमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, कैरियर गाइडेंस, शिक्षा भ्रमण आदि शामिल होते थे। इन सब के कारण मुझे विद्यालय में पढाई का अनुकूल वातावरण मिला तथा उचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। पढ़ाई के साथ साथ मैं विद्यालय में वॉलीबॉल भी खेला करता था। इस तरह विद्यालय में मेरा मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक एक तरह से सर्वांगीण विकास हुआ। समय समय पर सेवा भारती और विद्यालय के पुरातन भैया लोगों के द्वारा कई पर्व भी हमारे साथ मनाये जाते थे, जिसमें रक्षाबंधन, होली, दीपावली आदि शामिल हैं। इस तरह मुझे कभी भी विद्यालय में परिवार की कमी महसूस नहीं हुई।

सेवाधाम से मैंने 2017 में 10वीं की परीक्षा 10 CGPA (95%) के साथ उत्तीर्ण की। 11वीं कक्षा में मैंने विज्ञान वर्ग से पढ़ाई की और 2019 में मैंने 12वीं की परीक्षा 86% अंकों के साथ उत्तीर्ण की। सेवा भारती द्वारा विद्यालय में कई विषयों के लिए अलग से स्पेशल कक्षाएं उपलब्ध कराए जाते थे जिनमें अनुभवी शिक्षकों के द्वारा हमें पढ़ाई के साथ साथ उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाता था। इस कारण हमें किसी विषय को समझने में बहुत आसानी हुई और हम परीक्षाओं में बेहतर अंक प्राप्त कर सके।

12वीं के बाद मैंने सेवा भारती तथा सेवाधाम के पुरातन छात्र भैया लोगों के द्वारा संचालित वजीराबाद में स्थित प्रकाशानंद छात्रावास में 2019 में प्रवेश लिया। 12वीं में अच्छे अंक होने के कारण ग्रेजुएशन के लिए मेरा एडमिशन दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में हो गया, जहाँ मैंने BA PROGRAMME (इतिहास, राजनीति विज्ञान) में अपना दाखिला करवाया। प्रकाशानंद छात्रावास में ही रहकर मैंने अपनी पूरी ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की। कॉलेज के दिनों में सेवा भारती के द्वारा एक मेंटर प्रोग्राम भी चलाया गया जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न विषयों के प्रोफेसर शामिल थे। प्रोफेसरों के द्वारा समय समय पर हमारा मूल्यांकन भी किया जाता था तथा साथ ही समय समय पर कई शैक्षिक बैठकें भी की जाती थीं, जिसके कारण मुझे कॉलेज में किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। मेंटर्स के द्वारा हमें कई जानकारियाँ प्रदान की गयीं साथ ही हमें हमेशा पढ़ाई के लिए प्रेरित किया गया। कॉलेज में किसी समस्या का सामना न करना पड़े इसके लिए सेवा भारती के द्वारा छात्रावास में अंग्रेजी सीखने हेतु English speaking course भी कराया गया। इस तरह छात्रावास के अच्छे वातावरण में रहकर मैंने 2022 में अपनी ग्रेजुएशन 7.54 CGPA(71.6%) अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

इसके बाद मैंने 2023 में NATIONAL TESTING AGENCY (NTA) द्वारा आयोजित CUET&PG की परीक्षा पास कर देश के प्रतिष्ठित जवाहर लाल नेहरु विश्विद्यालय, दिल्ली में आधुनिक इतिहास विषय में प्रवेश लिया। JNU में भी मुझे सेवा भारती द्वारा समय समय पर सहायता प्रदान की गयी, अनुभवी प्रोफेसर तथा अच्छे छात्रों की संगती प्रदान करवाई गयी। इस तरह से मैंने 2025 में परास्नातक (PG) 76.8% अंकों के साथ उत्तीर्ण की। इसके साथ ही जून 2025 में NATIONAL TESTING AGENCY (NTA) द्वारा आयोजित NET&JRF की परीक्षा में मैं 99.74 PERCENTILE प्राप्त कर JRF की उपलब्धि हासिल की।

ईश्वर की कृपा, माता पिता व गुरुजनों के आशीर्वाद के साथ-साथ सेवा भारती को दिल से आभार जिनकी वजह से आज मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया हूँ। और मुझे पूरा विश्वास है की आगे भी वे मेरी हरसंभव मदद अवश्य करेंगे। ❑

– ***सौरभ*** *(सेवाधाम, बैच: 2012-19)*

सेवाधाम विद्यामंदिर की गतिविधियाँ

शिक्षक - शैक्षणिक भ्रमण

13 जून, प्रातः 6:30 बजे शैक्षणिक भ्रमण के लिए सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर से प्रस्थान किये। सर्वप्रथम ग्राम भारती सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज ,छियारसी पहुंचे। विद्यालय में भौतिक विज्ञान के शिक्षक श्री प्रदीप सिंह तोमर जी से मुलाकात हुई विद्यालय के बारे में विस्तार से बताया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विकास जी ने नई शिक्षा नीति 2020 पर प्रकाश डाला। विद्यालय की आगे की योजना के बारे में बताते हुए आपने बताया कि यहां एक गौशाला , शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र,बालिका विद्यालय बनाना है। हम सभी को हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए और खुशी मन से अपने कार्य को करना चाहिए।

सायं 7:00 बजे हम सभी पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विद्या मंदिर, नैनीताल पहुंचे। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ सूर्य प्रकाश जी के साथ हम सभी का परिचय हुआ और आवासीय विद्यालय को कैसे अच्छे से चला सकते हैं, इस पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

14 जून, को श्री गोलू देव मंदिर - घोड़ा खाल, भीमताल, नौकुचिया ताल गये। पहाड़ की प्राकृतिक सौंदर्य को देखते हुए धार्मिक स्थलों का दर्शन किए।

15 जून, को प्रेमा जगाती सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य कक्ष , छात्रावास,भोजनालय,स्टोर रूम, वस्त्रागार, स्वाध्याय, पुस्तकालय, भौतिक विज्ञान कक्ष, रसायन विज्ञान कक्ष, जीव विज्ञान कक्ष, चिकित्सालय, वन्दना कक्ष, खेल मैदान इत्यादि जगहों को देखा।

विद्यालय देखने के पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ सूर्य प्रकाश जी के साथ हम सभी की बैठक हुई। बैठक में शिक्षा व्यवस्था, छात्रावास, स्वाध्याय, अनुशासन, दिनचर्या, छात्रों का राष्ट्रवादी विचारधारा के साथ निर्माण निर्माण हो इत्यादि विषयों पर चर्चा हुई। इसके बाद हम सभी नैनीताल जाकर नयना देवी मंदिर में दर्शन किये।

सावन मन भावन

■ डॉ. दीप्ति अग्रवाल

'सावन मन भावन' का पावन माह चल रहा है। मैं अपने बचपन की यादों के बुगचे को खोल कर बैठी हूँ। बुगचे में मेरे बचपन का झूला निकला, वीरबहूटी के मखमली शरीर का स्पर्श ने छुआ, कच्चे नीम की निंबोली, सावन जल्दी आइयों रे बाबा दूर मत बिहाइयों दादी नहीं बुलाने की वाला गीत गुनगुना उठा, बारिश के पानी भरी बोतल जिससे मुंह धोते थे, जगजीत सिंह की कागज की कश्ती, तीजों की मेहंदी, सिन्धारे के दादी के दिए 10 रुपये, बारिश में भीगने पर माँ जो सिर में लगाती थी गरम तेल उसकी शीशी, सासू माँ की दी हुई मोती की चूड़ी और भी बहुत कुछ बुगचे में से निकल आए। बचपन में बारिश में भीगा तन आज मन को सीला कर गया। कितना आगे आ गए हम सब लोग, लेकिन कितना कुछ खो कर, यही जिंदगी का सच है। खैर शिव-पार्वती सबके जीवन में सावन की फुहार बरसाते रहे और इंद्रधनुषी रंगों से सबका जीवन सजा रहे यही कामना है। सावन में आये इन्द्रधनुष या धनक पर एक कविता:

धनक

धनक के रंग जीवन में उगाने के लिए
जरूरी नहीं है सातों रंगों का होना
एक रंग से भी शुरू करके
बन जाएँगे सातों रंग,
गर मन में उत्साह हो तो
लाल रंग तो खड़ा ही है दहलीज पर,
गर साफ शफ्फ़ाक दिल हो तो
नीला आकाश दे ही देगा नीलाभ अपनी
गर माँगोगे दिल से
प्रेम ऊर्जा से भरी झोली में
नारंगी फूल ही तो खिलते हैं
और तुम्हें पता है जहां मिले सहजता और उत्साह
तो बन जाता है पीला रंग
बचा हरा रंग, तो वो ले लेंगे प्रकृति
की चूनर से उधार, हाथ जोड़कर
देखो, मेरे पास तो केवल एक था रंग उनाबी
मेरे सपनों का रंग
पर उसने बना दिया पूरा इंद्रधनुष
और उसके सातों रंग से बना सफ़ेद रंग
शांति का प्रतीक
जो गर छा जाये पूरे विश्व में तो
पूरा विश्व बन जाये एक बड़ा धनक। ❐

ग्रीष्मावकाश शिविर (पूर्वी विभाग)

हर वर्ष पूर्वी विभाग में गर्मी की छुट्टियों में बस्ती के बच्चों के लिये पढ़ाई से अलग मनभाती क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष ये शिविर 16 से 30 जून तक लगे। अबकी बार शाहदरा और गांधी नगर जिले में यह आयोजन किया गया। हर दिन संख्या 40 से 50 तक रही। बच्चों की रुचि के अनुसार नृत्य, आर्ट और क्राफ्ट, ढोलक बजाना, भिन्न-भिन्न प्रकार के खेल खिलाना। विशिष्ट या विशेषज्ञ लोगों को बुलाकर उपरोक्त विधाओं की जानकारी बच्चों को दी गई। कॉलेज के आने वाली इन्टनर्स ने बच्चों को आर्ट एण्ड क्राफट सिखाए और खेल भी खिलाए। कक्षा के अन्त में हर दिन दानदाताओं के द्वारा शिकंजी, जूस, फ्रूट सलाद, पूरी भाजी आदि जो भी संभव हुआ अवश्य दिया गया। समापन के दिन सभी बच्चों को फ्राक्स व टी शर्ट दी गई। भजन मण्डली की बहनों का भी सहयोग रहा। विभाग के कार्यकर्ता बन्धुओं, बहनों, जिले की कार्यकारिणी और शिक्षिकाओं और निरीक्षिकाओं के सहयोग से ही यह आयोजन संभव हो पाया। बच्चों का उत्साह और प्रसन्नता देखते ही बन रहा था। नया कुछ कर पाने, सीख पाने की उमंग से ओतप्रोत दिखे। खाली समय का सदुपयोग सेवा भारती के माध्यम से ही संभव हो पाया। *-भारती बंसल*

‘वाणी’ को मिली वाणी

गत 13 जुलाई 2025 को सेवा भारती दिल्ली ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी), नई दिल्ली में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य मूक और बधिर बच्चों की सहायता के लिए समर्पित स्वास्थ्य सेवा पहल ‘वाणी’ को उजागर करना था।

वाणी के बारे में...

‘वाणी’ सेवा भारती दिल्ली की एक स्वास्थ्य सेवा पहल है, जिसका उद्देश्य प्रारंभिक हस्तक्षेप और ‘कॉक्लियर इम्प्लांट’ सर्जरी के माध्यम से बच्चों में श्रवण बाधितों की पहचान और उपचार करना है। यह कार्यक्रम वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए आशा का स्रोत है, जिनमें से कई बच्चों को अन्यथा ऐसे जीवन-परिवर्तनकारी उपचार कभी नहीं मिल पाते। डॉ. संजय सचदेवा जैसे प्रख्यात ई. एन.टी विशेषज्ञों के सहयोग से, यह पहल प्रतिमाह 1-2 सर्जरी प्रदान करने का प्रयास करती है, जिससे दीर्घकालिक विकासात्मक लाभ सुनिश्चित होते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री मनोरंजन जी द्वारा अतिथियों का स्वागत और वाणी के पीछे के दृष्टिकोण से परिचय कराने के साथ हुई। उन्होंने मुख्य अतिथि, माननीय न्यायमूर्ति श्री गिरीश कठपालिया और विशिष्ट अतिथि का भी परिचय कराया। श्री रमेश अग्रवाल, डॉ. दीपक शुक्ला, श्रीमती ललिता निझावन और डॉ. संजय सचदेवा।

डॉ. सचदेवा ने वाणी पर एक विस्तृत अवधारणा पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें श्रवण बाधित बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों और ‘कॉक्लियर इम्प्लांट्स’ द्वारा एक शक्तिशाली समाधान प्रदान करने के तरीके को रेखांकित किया गया। औसतन 7.75 लाख की सर्जरी लागत और कभी-कभी पूरे उपचार की लागत 20-25 लाख तक पहुँचने के साथ, यह पहल एक वित्तीय अंतर को दूर करने में मदद करती है जिसे अधिकांश परिवार स्वयं दूर नहीं कर सकते। कई उपस्थित लोग, जिनमें लंबे समय से दान देने वाले और साझेदार शामिल थे उन्होनें, उन माता-पिता से भावनात्मक प्रशंसापत्र देखे जिनके बच्चों को लाभ हुआ है। कई लोगों ने परिवर्तन की कहानियाँ साझा कीं ‘मौन से ध्वनि तक’ खुशी और कृतज्ञता के आँसुओं के साथ। सबसे मार्मिक क्षण तब आया जब बच्चों ने मंच संभाला और प्रयास और साहस के साथ, अपना नाम बताया और कुछ शब्द बोले-एक बार अकल्पनीय वास्तविकता।

जैसा कि डॉ. सचदेवा ने सटीक टिप्पणी की, ‘यही प्रभाव है, जब कोई बच्चा पहली बार बोलता है। यह सिर्फ़ चिकित्सकीय सफलता नहीं है; यह पुनर्जन्म का क्षण है। यह इस मिशन में हमारे विश्वास की पुष्टि करता है।’

न्यायमूर्ति कठपालिया ने सेवा भारती और उसके सहयोगियों के कार्यों की सराहना की और इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे इस तरह की पहल न केवल एक बच्चे का जीवन बदलती है, बल्कि एक पूरे परिवार और समुदाय का उत्थान करती है। कार्यक्रम का समापन देशभक्ति पूर्ण वंदे मातरम के गान और श्री रमेश अग्रवाल जी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने एक बच्चे के समग्र विकास, शिक्षा और भविष्य की संभावनाओं में श्रवण की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया। ‘वाणी केवल ध्वनि के बारे में नहीं है, यह सपनों को आवाज़ देने के बारे में है।’ ❐

सुख का आधार

जिस प्रकार वृक्षारोपण करने से आपको शीतल छाया स्वत: प्राप्त हो जाती है, उसी प्रकार शुभ कार्य दान इत्यादि करने से समय आने पर सुख की प्राप्ति भी स्वत: हो जाती है। आपके द्वारा संपन्न ऐसा कोई शुभ और सद्कार्य नहीं जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति द्वारा आपको उचित पुरस्कार देकर सम्मानित ना किया जाए। कुँआ खोदा जाता है तो फिर आपकी प्यास बुझाने के लिए शीतल जल की प्राप्ति भी स्वत: हो जाती है। जब-जब आपके द्वारा किसी और की भलाई के लिए निस्वार्थ भाव से कोई कार्य किया जाता है, तब-तब आपके द्वारा वास्तव में अपनी भलाई की ही आधारशिला रखी जा रही होती है। आज आप किसी जरूरतमंद के लिए सहायक बनोगे तो आवश्यकता पड़ने पर कल आपकी सहायता और सहयोग के लिए भी कई हाथ खड़े होंगे। सबकी प्रसन्नता के लिए जीने का भाव ही परमात्मा को प्रसन्न करने का मूलमंत्र भी है। ❐

हरियाली तीज के कार्यक्रम

उत्तरी विभाग

सेवा भारती उत्तरी विभाग की ओर से चारों जिलों– बुराड़ी, कंझावला, रोहिणी और नरेला में तीज उत्सव मनाया गया। 25 जुलाई को कंझावला जिले के निठारी नगर के महाराजा अग्रसेन भवन में तीज महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का आरंभ गायत्री मंत्र द्वारा हुआ तथा दीप प्रज्वलन प्रांत सेवा टोली सदस्य पुष्पेंद्र जी (प्रचारक), विभाग सेवा प्रमुख योगराज जी, विभाग सह मंत्री संदीप जी, विभाग शिक्षा एवं स्वावलंबन प्रमुख श्याम तायल जी, अग्रवाल एकता मंच किराडी के संस्थापक राजकुमार गोयल जी तथा विश्व हिन्दू परिषद से आए आचार्य नवल किशोर जी द्वारा किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आरंभ श्री गणेश वंदना और सरस्वती माता की वंदना से हुआ। सेवितजनों एवं शिक्षिकाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिसका सभी अतिथियों ने भी खूब आनंद लिया। मंच संचालन शिक्षिकाओं (साक्षी जी, विशाखा जी एवं डिम्पल जी) द्वारा ही किया गया। बहन डॉ सुमित्रा दहिया जी प्रांत प्रचार टोली सदस्य ने तीज से जुड़े हुए इतिहास से सभी को परिचित कराया एवं अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव का भाव रखने का मंत्र भी दिया। श्रीमान पुष्पेंद्र जी ने सेवितजनों और शिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सराहना की एवं श्रीमान श्याम तायल जी ने महाराजा अग्रसेन भवन का वातानुकूलित परिसर नि:शुल्क उपलब्ध कराने के लिए अग्रवाल एकता मंच किराड़ी का धन्यवाद किया। कल्याण मंत्र एवं भोजन मंत्र के बाद सभी ने भोजन का आनंद लिया तथा उसके पश्चात शिक्षिकाओं कार्यकर्ताओं सेवितजनों अतिथियों ने मेहंदी लगवाई तथा लोकगीतों पर नृत्य का आनंद भी लिया। आज के कार्यक्रम में ईशान एकेडमी मजरी गांव से सुमन जी कराला गांव से अध्यापिका (टीजीटी) ज्योति जी तथा उनके साथ आई एक बहनजी ने और रोहिणी सेक्टर 21 से नीलम वाधवा जी एवं किरण जी के साथ आई हुई बहनों ने भी कार्यकर्ता के रूप में जुड़ने की मंशा जताई, बहनों के साथ ही निठारी नगर से रणवीर जी राजेश जी तथा हरिजन बस्ती कृष्ण विहार नगर के पूर्व प्रधान राजेश शर्मा जी ने भी कार्यकर्ता के रूप में जुड़ने के लिए सहमति दी, जो आज के कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धि रही।

बुराडी जिले में हरियाली तीज महोत्सव महाराणा प्रताप भवन बख्तावरपुर में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गीत, गायत्री मंत्र व दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर बुराडी जिला संघचालक श्री देविन्दर जोशी जी, उत्तरी विभाग अध्यक्ष श्री राजिंदर मित्तल जी, विभाग मंत्री श्री आज़ाद सिंह जी, सामाजिक व महिला प्रमुख श्रीमती रीना शर्मा जी, जनता देवी निगम पार्षद जी, नगर संघचालक श्री विकास जी, सह जिला कार्यवाह श्री विकास गोयल जी, श्री राज सिंह जी जिला अध्यक्ष आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे। जिले के सभी केंद्रों के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पर प्रस्तुति दी।

उत्तम जिला

गत 25 जुलाई को सेवा भारती उत्तम जिला द्वारा हरियाली तीज का कार्यक्रम अत्यंत उल्लासपूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं गायत्री मंत्र के साथ हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में विभाग अध्यक्ष श्री राजेन्द्र तिवारी जी, विभाग मंत्री श्री अनिल निगम जी, जिला अध्यक्ष श्री बृजलाल मग्गो जी एवं जिला मंत्री श्री तारकनाथ जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच का संचालन महिला मंडल मंत्री श्रीमती पूजा गुप्ता जी ने प्रभावी ढंग से किया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा समिति से श्रीमती पुष्पा ठाकुर जी का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। भजन मंडली की बहनों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। साथ ही, उपस्थित बहनों के लिए मेंहदी की विशेष व्यवस्था भी आकर्षण का केंद्र रही।

महिला मंडल की ओर से श्रीमती रामेश्वरी जी द्वारा सभी बहनों को उपहार भेंट किए गए। इस अवसर पर उपस्थित साथी बंधुओं को भी साहित्य रूपी उपहार - किताबें भेंट की गईं। अंत में कल्याण मंत्र के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा सभी उपस्थितजनों ने अल्पाहार ग्रहण कर प्रसन्नतापूर्वक विदा ली।

सुदामापुरी

गत 25 जुलाई को यमुना विहार विभाग के जिला रोहतास नगर में माधव सेवा केंद्र सुदामा पुरी में तीज महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसमें जिले की सभी शिक्षिकाओं और निरीक्षिक्काओं एवं भजन मंडली की बहनों की सहभागिता रही। बहनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, गायन की प्रतियोगिता का आयोजन किया। रितु खंडेलवाल ने गायन में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा नृत्य में बहन पूनम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसमें जिला रोहतास नगर की महिला समिति अध्यक्ष रितु जैन, मंत्री ललिता जी, सह मंत्री सीमा जी उपस्थित रहीं।

झिलमिल और आनंद विहार

गत दिनों झिलमिल व आनंद विहार में किशोरी विकास की कक्षा में शिक्षिका सिमरन के साथ किशोरी विकास की छात्राओं ने मेहंदी, नृत्य व खेल के साथ तीज का पर्व मनाया। अंत में शाहदरा जिला की ओर से सभी के लिए जलपान की व्यवस्था रही।

कलंदर कॉलोनी

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में हरियाली तीज के शुभ अवसर पर 26 जुलाई 2025 को सामूहिक रूप से तीज एवं भजन कीर्तन का आयोजन हुआ। बस्ती की भजन मंडलियों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाने का कार्य किया। इस कार्यक्रम में सेवा बस्ती की लगभग 60 महिलाओं की सहभागिता रही। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ दोपहर 02 बजे से गणेश जी एवं गौरी-शिव जी के भजन से हुआ। कार्यक्रम में सम्मिलित सभी महिलाओं ने भजन कीर्तन किया। कार्यक्रम के समापन के उपरांत उपस्थित सभी जनों को प्रसाद के रूप में पूड़ी-सब्जी, हलवा तथा दो दो केले का प्रसाद वितरित किया गया। इस प्रकार इस वर्ष सामूहिक रूप से हरियाली तीज त्योहार को बस्ती की महिलाओं ने धूमधाम से केंद्र में शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के साथ मनाया। ❒

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

एक समाज सुधारक के निर्माण में सेवा भारती की भूमिका

■ प्रतिनिधि

दिल्ली की एक झुग्गी-झोपड़ी की जर्जर गलियों में, एक दो साल के बच्चे और उसकी छोटी बहन को उनके माता-पिता ने एक बार अभाव और उपेक्षा के माहौल में अकेला छोड़ दिया था। आज, वह लड़का देवेंद्र कुमार, एक विश्व-प्रसिद्ध समाज सुधारक के रूप में उभरे हैं। गरीबी से विश्व प्रसिद्धि तक का उनका यह परिवर्तन सेवा भारती के मार्गदर्शन से जुड़ा है।

देवेंद्र ने अपना प्रारंभिक जीवन अत्यंत संघर्षों में बिताया। परित्यक्त हो जाने के बाद, उन्होंने अपनी बहन का पालन-पोषण करने के लिए गुब्बारों का व्यवसाय किया और छोटे-मोटे कामों से जीवन चलाया। उनके जीवन में जब सेवा भारती का प्रवेश हुआ, तो सब कुछ बदल गया। इस संगठन ने उन्हें न केवल आश्रय और स्थिरता प्रदान की, बल्कि शोषण से मुक्ति दिलाते हुए शिक्षा, अनुशासन और निस्वार्थ सेवा की भावना भी दी, और यही मूल्य उनके जीवन का लक्ष्य और मिशन बन गए।

बचपन के ज़ख्म- जैसे अपनी बहन को बाल विवाह के लिए मजबूर करने की कोशिशों का विरोध और दहेज प्रथा को खुली चुनौती ने देवेंद्र के भीतर कमजोर लड़कियों की सुरक्षा के लिए एक दृढ़ संकल्प को प्रज्वलित किया। यही अनुभव उनके भीतर वंचित वर्ग में जी रही समुदायों, विशेषकर गरीबी के दुष्चक्र में फंसी महिलाओं और बच्चों को सशक्त बनाने का एक प्रज्वलित जुनून बन गया।

लाडली फाउंडेशन के संस्थापक के रूप में, भारत, अमेरिका और अफ्रीका में काम करने वाले एक जमीनी संगठन के रूप में, देवेंद्र ने शिक्षा, सम्मान और सामाजिक न्याय पर केंद्रित कार्यक्रमों के साथ 30 लाख से अधिक व्यक्तियों के जीवन को छुआ है। उनके काम के लिए उन्हें भारत सरकार से दो राष्ट्रीय पुरस्कार और लगातार चार राष्ट्रपतियों- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, प्रणब मुखर्जी, राम नाथ कोविंद और द्रौपदी मुर्मू से सम्मान प्राप्त हुए हैं। 2020 में, शोषण के खिलाफ उनके प्रयासों के लिए उन्हें भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान- पद्मश्री के लिए चुना गया था। महिलाओं और बालिकाओं को तस्करी और शोषण से बचाने के उनके प्रयासों को लेकर बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने उन्हें "सच्चा हीरो'' कहा।

देवेंद्र की वकालत का प्रभाव अब अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैल चुका है। महिलाओं के स्वास्थ्य और बाल विवाह की रोकथाम पर उनके नीतिगत सुझावों को 2021 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के महिलाओं की स्थिति पर 65वें आयोग की बैठक में विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया, जहाँ संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने उनके कार्य की सराहना की।

भारत और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और जलवायु सम्मेलन जैसे वैश्विक सम्मेलनों के माध्यम से, वह विश्व नेताओं को सामाजिक न्याय और जलवायु परिवर्तन के लिए प्रेरित करते हैं। देवेंद्र की परिवर्तनकारी यात्रा के मूल में सेवा भारती के सेवा दर्शन का गहरा प्रभाव है। दिल्ली की झुग्गियों में एक उपेक्षित बच्चे से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आशा की किरण तक, उनकी कहानी इस बात को रेखांकित करती है कि कैसे करुणा और दृढ़ता विपरीत परिस्थितियों को सामाजिक परिवर्तन में बदल सकते हैं। "कोई भी बच्चा पीछे न छूटे''-यही उनका मंत्र है, जो एक न्यायसंगत और समतामूलक भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण को प्रेरित करता है। ❐

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 अगस्त, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 अगस्त, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

धर्मशाला में कमरों का लोकार्पण

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सेवा भारती, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने बाबा गरीब दास धर्मशाला में जरूरतमंदों के लिए बनाए कमरों का लोकार्पण किया। श्री अग्रवाल ने पूज्य संत बाबा राजेंद्र नाथ जी के मार्गदर्शन, सेवा भारती के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं सहित भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री दुष्यंत गौतम जी की पावन उपस्थिति में संत समाज का आशीर्वाद प्राप्त किया और सबके साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन प्रसाद भी ग्रहण किया। बाबा गरीब दास धर्मशाला लोकनायक जयप्रकाश और जीबी पंत अस्पताल के नज़दीक है। इन नवनिर्मित कमरों में मरीज़ों के तीमारदारों को रहने के लिए निःशुल्क कमरे उपलब्ध होंगे। ❐

गुरु पूर्णिमा पर भजन-कीर्तन

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, केशव सेवा केंद्र, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में गत 10 जुलाई 2025 दिन बृहस्पतिवार को पूर्णमासी एवं गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बस्ती की महिलाओं के द्वारा भजन कीर्तन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं भगवान सत्यनारायण के पूजन एवं कथा से प्रारम्भ हुआ। उसके बाद बस्ती की भजन मंडलियों के द्वारा भजन कीर्तन के कार्यक्रम की शुरुआत हुई। श्री गणेश जी एवं भगवान शंकर जी के भजनों से प्रारम्भ होने के बाद अन्य सभी देवी-देवताओं के भजनों का गायन हुआ। कार्यक्रम में लगभग 30 महिलाओं ने सहर्ष भाग लिया तथा भजन कीर्तन के कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के उपरांत सभी सहभागियों को प्रसाद के रूप में कसार, पंचामृत एवं केले का वितरण किया गया। ❐

डॉ. शिवि जग्गी की सेवा-निष्ठा

प्रांत की योजना अनुसार मनोचिकित्सक डॉ. शिवि जग्गी (MD&Physician, DPM (Psychiatry) और सेवा भारती दिल्ली प्रांत के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। यह समझौता निरामया प्रोजेक्ट के लिए है। इसके अनुसार डॉ. जग्गी बस्ती के दो लोगों को दैनिक निःशुल्क परामर्श देंगे। सेवा भारती से प्रांत संगठन मंत्री श्रीमान शुकदेव जी, प्रांत स्वास्थ्य आयाम प्रमुख श्रीमान हेमंत जी, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य श्रीमान विजेंदर जी, सरस्वती विहार जिले से माननीय अध्यक्ष श्रीमान प्रमोद जी, माननीय उपाध्यक्ष श्रीमान विनोद जी एवं जिला मंत्री श्रीमान अनुज जी शामिल रहे। बता दें कि डॉ. जग्गी का क्लीनिक शक्ति विहार नजदीक सरल डायग्नोस्टिक (सरस्वती विहार) में है। ❐

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।